।। श्री स्वामी समर्थाय नमः।।

।। श्री स्वामी साई माला अमृत बानी ।।

वैद्य गणेश लक्ष्मणराव शिंदे
(B.A.M.S.)

मनकर्णिका पब्लिकेशन

प्रस्तावना

जगद्गुरु श्रीस्वामी व जगद्गुरु श्रीसाई हे निरंतर पणे भक्तांना ज्ञान देत असतात. परमसंत रामदास व अन्य संतांनी लिहीलेल्या चालिसा संग्रहातुन ज्ञानाचा बोध स्वामी साई रुपाने स्फुरला. त्याच चालिसांच्या आधारावर स्वामी साई भक्तिची ज्योती पेटवून विश्वाला प्रकाश देण्याचा प्रयत्न केला आहे. या ज्ञानमयी प्रकाशाच्या सहाय्याने मनातील अज्ञानरुपी तम तसेच अहंभाव आणि षड्रिपुंचा त्रास कमी करण्याचा प्रयत्न केला आहे. माया प्रपंच सुटण्यासाठी एक सहजसाध्य उत्कृष्ट भक्ति मार्ग दाखवून देण्याचा चिमुकला प्रयत्न येथे केला आहे.

आपल्या प्रेमळरुपी ओंजळीने श्रीसाई भक्तांची तृप्ती करतात. या महान संत त्रिलोकाधिपती भक्तप्रतिपालक मायाविनाशक संजिवनकारी सद्गुरु श्रीस्वामीसाईंना भक्त संजिवना (वैद्य गणेश शिंदे), सुचेता, अर्थव तसेच श्री.गजानन, सौ.अर्चना, सौ.प्रियंवदा, प्रेरणा, यांनी या शुभकार्यास सहाय्य केले. त्याच प्रमाणे हा ग्रंथ प्रकाशित करणारे मनकर्णिका पब्लिकेशनचे श्री गिरीश दगडूलाल गांधी व मुखपृष्ठकार नयना मते यांचेही मोलाचे सहकार्य लाभले. या सर्वांच्या शिरी श्रीस्वामीं आणि श्रीसाईंचा वरदहस्त सदैव असूदे. तसेच त्यांना व त्यांच्या कुटुंबियांना श्रीस्वामी व श्रीसाई यांच्या आर्शीवादाचा अमृतलाभ अखंड मिळत राहू दे. श्रीस्वामी साईंनी हया पोथी मध्ये प्रत्येक अध्यायात १०८ ओव्या दिल्या आहेत. रोज पारायण करताना रुद्राक्ष, तुळशी, कमलागठ्ठा, मोती, स्फटीक आदी १०८ मण्यांची माळ घेऊन प्रत्येक ओवीने एक मणी ओढावा. अशा रीतीने एक अध्याय एक माळ पूर्ण करतो. हया अध्यायातील भाव त्रिकाला मध्ये भक्तांचे संरक्षण करतो. भक्तास सुप्रतिष्ठा मान प्राप्त करुन देतो. असे हे अमृत पान श्रीस्वामी साईनी भक्तास दिलेली संजिवनी बुटीच आहे. श्री स्वामी साईंनी दिलेला हा अमिरसाचा ठेवा भक्तांना संजिवन करेल हे नक्कीच.

हया १६ अध्यायांच्या किंवा प्रत्येक अध्यायाच्या पारायणा नंतर 'भर दे मेरी झोली' हे स्तोत्र वाचल्याने श्री स्वामी साई भक्तांची झोळी भरतात व भक्ताला सदैव सुखी ठेवतात.

अनुक्रमणिका

१. सुकिर्ती प्रतिष्ठादायक माला
२. राज्यपद माला
३. कामवश माला
४. शत्रुदमन माला
५. पापमोचक माला
६. मोहन माला
७. इच्छापूर्ती पदोन्नती माला
८. बंधन ऋणमोचक माला
९. बालकरक्षा माला
१०. व्याधीहरण माला
११. विद्या लक्ष्मी वर्धक माला
१२. अघोरीविद्या नाशक शापमोचक माला
१३. कुलदोषनाशक माला
१४. समृद्धी धनधान्य संवर्धन माला
१५. संजीवन व्याधीहरण माला
१६. गुरुज्ञान प्रकाश माला

अध्याय १ सुकिर्ती प्रतिष्ठादायक माला

जय जय जय गणपती गणराजु।मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। जय जय जय वंदन भुवन नंदन गौरि गणेश। दुख द्वंद्वन फंदन हरन, सुंदर सुवन महेश।।६।। जयति शिव सुत शक्ती नंदन। विघ्न हरन नासन भव फंदन।।७।। जय भक्तनायक, जय सुखदायक। विघ्न विनायक होवे सबका मालीक।।८।। तिलक त्रिपुण्ड भाल शशि सोहत। छबि लखि सुर नर मुनि मन मोहत।।९।। कर कुठार शुचि सुभग त्रिशुल। सुमधुर भोग सुगंधीत फुल।।१०।। सुंदर पिताम्बर तन साजित। चरण पादुका मुनि मन राजित।।११।। धनि शिव सुवन, भुवन सुख दाता। स्वामी साई, सदा आनंद का दाता।।१२।। ऋध्दि सिध्दि तव चवर सुधारे। भक्ती रुपी वाहन सोहत द्वारे।।१३।। तव महिमा को बरनै पारा। जन्म चरित्र विचित्र तुम्हारा।।१४।। षडरिपु असुर, मनही बनावै। भक्ती भावही मगन हेतु तव आवै।।१५।। एहि कारण स्वामी साई के भक्त प्यारे। कामादि मैल फेक दे सारे।।१६।। भक्ती रुप सुत करी काया रखवारे। द्वारपाल सम तेहि बैठारे।।१७।। स्वामी साईका नाम लेत जो कोई। जग कह सकल काज सिध्द होई।।१८।। सुमिरहिं तुमहिं मिलहि सुख नाना। बिनु तव कृपा न कहु

कल्याना।।१९।। नित्य स्वामी साई, जो गुण गावत। गृह बसि सुमति परम् सुख पावत।।२०।। जन धन धान्य सुवन सुखदायक। देहि सकल शुभ श्री भक्तीनायक।।२१।। श्री स्वामी साई चरित्र, पाठ करै धरि ध्यान। नित नव मंगल मोद लहि, मिलै जगत सम्मान।।२२।। मातु श्री स्वामी साई करि कृपा, करो हृदय मै बास। मनोकामना सिध्द करि, पुरवहु मेरी आस।।२३।। तुम समान नहिं कोई उपकारी। सब विधि पुरवहु आस हमारी।।२४।। जय जय जय स्वामी साई तु ही अम्बा। सबकी तुम ही हो अवलम्बा।।२५।। तुम ही हो घट घट की वासी। विनती यही हमारी खासी।।२६।। जग जननी तु ही मात हमारी। दिनन की तुम हो हितकारी।।२७।। विनवौ नित्य तुमहिं महारानी। कृपा करौ जग माता जननी।।२८।। केहि विधि स्तुति करौ तिहारी। सुधि लीजै अपराध बिसारी।।२९।। कृपा दृष्टि चितवौ मम् ओरी। जग जननी विनती सुन मोरी।।३०।। ज्ञान बुध्दि जय सुख की दाता। संकट हरो हमारी बनके माता।।३१।। माया सिन्धु जब विष्णु मथायो। मौल्यवान रत्न सिन्धु मे पायो।।३२।। मौल्यवान रत्न में स्वामीसाई सुखरासी। सेवा तुम्हारी कियो हमे बनावे दासी।।३३।। स्वामी साई जग में जन्म लीन्हा। भक्तीभाव सहित तहं सेवा कीन्हा।।३४।। तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी। कहलौ महिमा कहौ बखानी।।३५।। मन क्रम वचन करै सेवकाई। मन इच्छित वांछित फल पाई।।३६।। तजि छल कपट और चतुराई। पुजहि विविध भांती मन लाई।।३७।। और हाल में कहौ बुझाई। स्वामी साई का पाठ करै मन लाई।।३८।। ताको कोई कष्ट न होई। मन इच्छित पावै फल सोई।।३९।। त्राहि त्राहि जय दु:ख निवारी। त्रिविध ताप भव बंधन हारि।।४०।। स्वामी साई का पाठ पढे पढावै। ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।।४१।। ताको

कोई न रोग सतावै। पुत्र आदि धन संम्पति पावै।।४२।। पुत्रहीन अरू संपत्ती हीना। अन्ध बधिर कोढी अति दीना।।४३।। सुख सम्पत्ति बहुतसी पावै। कमी नहीं काहू की आवै।।४४।। बारह मास करै जो पुजा। तेहि सम धन्य और नहिं दूजा।।४५।। प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं। उन सम कोउ जग में कहुं नाहीं।।४६।। जय जय जय स्वामीसाई गुरु मानी। सब में व्यापित हो गुण खानी ।।४७।। तरते हुए चाँद भाई खोज में रहे मगन दिलाके अश्व साई ने किया मन भावन।।४८।। पत्थरपे रगड कें निकाले अगन् और निर। झुरका मारके चिलीम मजे में रहे साई पिर।।४९।। भुल चुक करि क्षमा हमारी। दर्शन दीजै दशा निहारी।।५०।। बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी। तुमहिं अक्षत दु:ख सहते भारी।।५१।। नहिं मोहिं ज्ञान बुध्दि है तन में। सब जानत हो अपने मन में।।५२।। रुप मनोहर जब करके धारण। कष्ट मोर अब करहु निवारण।।५३।। नमो स्वामी साई गुरुमाता। तेरो नाम सारा जगत विख्याता।।५४।। आदि शक्ति तु ही मात भवानी। पूजत सब भक्तजन मानी।।५५।। स्वामी साई सदा सब सुख करनी। निज जनहित भण्डारन भरनी।।५६।। श्वेत कमल दल पर तव आसन। सद्गुरु सुशोभित है पद्मासन।।५७।। श्वेताम्बर अरु श्वेता भुषण। श्वेतहि श्वेत सुसज्जित पुष्पन।।५८।। शीश छत्र अति रुप विशाला। गल सौहे मुक्तन की माला।।५९।। सुंदर सोहे रेशीम भेषा। विमल नयन अरु अनुपम् भुषा।।६०।। शान्ति स्वभाव मृदुल तव बानी। सकल विश्व को हो सुखखानी।।६१।। स्वामी साई धन्य हो माई। पंच तत्त्व में सृष्टि रचाई।।६२।। जीव चराचर तुम उपजाए। पशु पक्षी नर नारी बनाए।।६३।। क्षितितल अगणित वृक्ष जमाए। अमितरंग फल फुल सुहाए।।६४।। छवि बिलोक सुरमुनि

नरनारी। करे सदा तव जय-जय कारी।।६५।। सुरपति औ नरपत सब ध्यावै। तेरे सम्मुख शीश नवावै।।६६।। चारहु वेदन तव यश गाया। महिमा अमग पार नहिं पाया।।६७।। जापर करलो स्वामी साई तुम दाया। सोई जग में धन्य कहाया।।६८।। पल में राजाहि रंक बनाओ। रंक राव कर विलम्ब न लाओ।।६९।। जिन पर करहु स्वामी साई तुम बासा। उनका यश हो विश्व प्रकाशा।।७०।। जो ध्यावै सो बहु सुख पावै। विमुख रहै हो दुख उठावै।।७१।। स्वामी साई जन सुख दाई। ध्यांऊ तुमको शीश नवाई।।७२।। निज जन जानि मोहिं अपनाओ। सुख सम्पत्ति दे सुख नसाओ।।७३।। ॐ श्री श्री जय सुखकी खानी। रिध्दि सिध्दि देऊ मात जनजानी।।७४।। ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं सब व्याधि हटाओ। जन उन बिमल दृष्टि दर्शाओ।।७५।। ॐ क्लीं ॐ क्लीं शत्रुन क्षय कीजै। जनहित मात अभय वर दीजै।।७६।। ॐ नमो-नमो भव निधी तारनी। तरणि भंवर से पार उतारनी।।७७।। सुनहु स्वामी साई यह विनय हमारी। पुरवहु आशन करहु अंबारी।।७८।। ऋणी दुखी जो तुमको ध्यावै। सो प्राणी सुख सम्पत्ति पावै।।७९।। रोग ग्रसित जो ध्यावै कोई। ताकी निर्मल काया होई।।८०।। त्राहि त्राहि शरणागत तेरी। करहु स्वामीसाई अब नेक न देरी।।८१।। आवहु स्वामीसाई विलम्ब न कीजै। हृदय निवास भक्त वर दीजै।।८२।। जानूं जप तप का नहिं भेवा। पार करौ भवनिध बन खेवा।।८३।। बिनवों बार-बार कर जोरी। पूरण आशा करहु अब मेरी।।८४।। स्वामी साई मम संकट टारौ। सकल व्याधी से मोहिं उबारौ।।८५।। छायौ यश स्वामी साई का संसारा। पावत शेष शंभु नहिं पारा।।८६।। मैं भक्त निशिदिन शरण तुम्हारी। करहु पुरण अभिलाष हमारी।।८७।। जय हो स्वामी साई दीन दयाला। सदा करत सन्तन

प्रतिपाला।।८८।। कर त्रिशुल सोहत स्वामी साईके भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।८९।। सज्जन भक्त सोहैं तहं कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे।।९०।। भक्तजन जबहीं जाय पुकारा। तबहीं दु:ख प्रभु आप निवारा।।९१।। किया तपहिं इस पामर ने भारी। पुरव प्रतिज्ञा तासु मुरारी।।९२।। दानिन महं तुम सम कोइ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं।।९३।। कठिन भक्ति देखी स्वामी साई सुर। भये प्रसन्न दिये इच्छित वर।।९४।। जय जय जय स्वामी साई अनन्त अविनाशी। करत कृपा सबके घटवासी।।९५।। दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं। भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै।।९६।। त्राहि त्राहि मैं स्वामी साई पुकारौं। यहि अवसर मोहि आन उबारौ।।९७।। यार भ्राता सब जग में होई। संकट में पुछत नही कोई।।९८।। स्वामी साई एक है आस तुम्हारी।आय हरहु मम् संकट भारी।।९९।। धन निर्धन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे सो फल पाहीं।।१००।। स्वामी साई हो संकट के नाशन। विघ्न विनाशन मंगल कारन।।१०१।। योगी यती मुनि ध्यान लगावें। नारद सारद शीश नवावें।।१०२।। नमो नमो जय नम: शिवाय। सुर ब्रम्हदिक पार न पाय।।१०३।। जो यह पाठ करे मन लाई। ता पर होत हैं शम्भु सहाई।।१०४।। पुत्र होन कर इच्छा कोई। निश्चय स्वामी साई प्रसाद तेहि होई।।१०५।। जय जय जय श्री माया के लाला। जयति जयति संसार का कुतवाला।।१०६।। श्री माई आई तत्त्वों के राजा। बाधा हरत करत शुभ काजा।।१०७।। ऐसे स्वामी साई की अमृत बानी पढे पढावै। सारे विश्व मे रवि समान सुकिर्ती फैलावै।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय २ राज्यपद माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। जय जय जय श्री माया के लाला। जयति जयति संसार का कुतवाला।।६।। लखी प्रेम की महिमा भारी। ऐसे स्वामी साई सुंदर हितकारी।।७।। जयति सुख कारी तुम भय हारी। जयति निरंजन साई तु बलकारी।।८।। जयति नाथ सदगुरु विख्याता। जयति सर्व नृसिंह साई सुखदाता।।९।। स्वामी साई रुप कियो शिव विष्णु धारण। भव के भार उतारण कारण।।१०।। शेष महेश आदि गुण गायो। संसार के कुतवाल स्वामी साई को कहायो।।११।। जीवन दान दास को दीन्हा। स्वामी साई का आशीर्वाद तुम भय लीन्हा।।१२।। धन्य धन्य समर्थ साई भय भंजन। जय मनरंजन खल दल भंजन।।१३।। जो निराकार साई निर्भय गुण गावत। अष्टसिध्दि नवनिधि फल पावत।।१४।। रुप विशाल कठिन दुख मोचन। क्रोध कराल लाल दुहुं लोचन।।१५।। रत्न जटित कंचन सिंहासन। व्याघ्र चर्म शुचि नर्म सुआसन।।१६।। जय प्रभु संहारक सुनन्द जय। जय उन्नत हर स्वामी साई जय।।१७।। भीम त्रिलोचन माई साई जय। बैजनाथ श्री जगतनाथ जय।।१८।। महाबल वीर काश्यप साई जय। योगी साई वीर साई जय।।१९।। अश्वनाथ जय स्वामीनाथ साई जय। हंसारूढ सुर्य चंन्द्रनाथ जय।।२०।। निमिष दिगम्बर चक्रनाथ जय। गहत

अनाथन नाथ हाथ जय।।२१।। करत कृपा जन पर बहु ढंगा। संसार पाली सह लेके गंगा।।२२।। जनकर निर्मल होय शरीरा। मिटै सकल संकट भव पीरा।।२३।। श्री साई आई तत्वों के राजा। बाधा हरत करत शुभ काजा।।२४।। जय जय आदिशक्ती का लाला। रहो दास पर सदा दयाला।।२५।। कर में त्रिशुल है कठिन कराला। गल में प्रभु सुंदर पुष्प की माला।।२६।। कृष्ण रुप स्वामी साई का वर्ण विशाला। रक्षण करे तु ही सबका रखवाला।।२७।। रुद्र बटुक भक्तन के संगी। सुंदर रुप करो मन को दंगी।।२८।। सखा दयालु है नाम तुम्हारा। चक्रदंड है तुमको पियारा।।२९।। शेखर चंद्र कपाल विराजै। सात अश्व सवारी पै प्रभु गाजै।।३०।। शिव नकुलेश चंड हो स्वामी। बैजनाथ प्रभु नमो नमामी।।३१।। अश्वनाथ क्रोधेश बखाने। भैंरो काल जगत न जाने।।३२।। गायत्री कहैं निमिष दिगम्बंर। जगन्नाथ उन्नत आडम्बर।।३३।। क्षेत्रपाल दशपाणि कहाए। शंभु मुरारी साजेसे कहलाए।।३४।। चक्रनाथ भक्तन हितकारी। कहैं त्रयम्बक सब नर नारी।।३५।। पालक सुनन्द तव नामा। करहु भक्त के पूरण कामा।।३६।। नाथ दिन भक्तजन के हो प्यारे। संकट मेटहु सकल हमारे।।३७।। कृत्यायू सुंदर आनंदा। भक्त जनन के काटहु फंदा।।३८।। हो तुम देव त्रिलोचन नाथा। भक्त चरण में नावत माथा।।३९।। करो माया तुही दीन दयाला। तुही महाकाल कालों के काला।।४०।। ताप विमोचन अरिदल नासा। भाल चंद्रमा करहिं प्रकाशा।।४१।। सुंदर हो लाला भाग्यधारी। कहां तक शोभा कहूं तुम्हारी।।४२।। शिव विष्णु के अवतार स्वामी साई कृपाला। रहो चकाचक पीते अमिरस प्याला।।४३।। ब्रम्हांड के कुतवाल कहाओ। तुमही बटुकनाथ सारे दु:ख को बुझाओ।।४४।। मठ में सुंदर लटकत झावा।

सिध्द कार्य कर निरंजन साईबाबा।।४५।। खंडोबा कें मंदीर में बाबा ने लिया निवारा। म्हाळसापतीने आनंद में साईनाम से पुकारा।।४६।। शिर्डी में नांदे अवलिया जय साई दुलारा वाली बने जगत का भक्तों को सवारा।।४७।। स्वामी साईका भजन सदाहीं गाऊं। बार बार पद शीश नवांऊ।।४८।। कश्यप माई तुही करुणाकर। चोळाप्पा जैसे शिष्य पर दयाकर।।४९।। भक्ती आस बाळप्पा की पुराओ। संग संग प्रेम की बारीश कराओ।।५०।। लक्ष्मी सुंदरा सेवा करे साई स्वामी। नमो नमामी प्रभो तुही अंतर्यामी।।५१।। जय जय नृसिंह साई अविनाशी। कृपा करो गुरु देव प्रकाशी।।५२।। जय जय जय योगी माई गुण ज्ञानी। इच्छा रूप योगी वरदानी।।५३।। अलख निरंजन तुम्हरो नामा। सदा करो भक्तन हित कामा।।५४।। नाम तुम्हारा जो कोई गावे। जन्म जन्म के दु:ख मिट जावे।।५५।। जो कोई गोराखी साई सुनावे। भूत पिशाच निकट नहिं आवे।।५६।। ज्ञान तुम्हारा योग से पावे। रुप तुम्हारा लख्या न जावे।।५७।। निराकार तुम हो निर्वाणी। महिमा तुम्हरी वेद न जानी।।५८।। घट घट के तुम अन्तर्यामी। सिध्द चौरासी करे प्रणामी।।५९।। भस्म अङ्ग गल नाद विराजे। जटा शीश अति सुन्दर साजे।।६०।। तुम बिन धारक और नहिं दूजा। देव मुनी जन सब करते पुजा।।६१।। चिदानन्द सन्तन हितकारी। मंगल करण अमंगल हारी।।६२।। पूरन ब्रम्ह सकल घट वासी। स्वामीनाथ साई सकल प्रकाशी।।६३।। यतिश्वर साई जो काई गावे। ब्रम्ह रूप के दर्शन पावे।।६४।। शंकर रूप धर डमरु बाजे। कानन कुण्डल सुन्दर साजे।।६५।। नित्यानन्द है नाम तुम्हारा। असुर मार भक्तन रखवारा।।६६।। अति विशाल है रुप तुम्हारा। सुर वर मुनि जन पावे न पारा।।६७।। मै मुढ मतिहीन दरिद्री अभागा। होके

गुरुकृपा स्वामी साई सेवा में लागा।।६८।। देके मेवा तुम जाओ ऐसे फटकारा। फुलावे जीवन सुभाग्य का करे फवारा।।६९।। दीन बंधु दीनन हितकारी। हरो पाप हर शरण तुम्हारी।।७०।। जोग जुगति में हो परकाशा। सदा करो सन्तन तन वासा।।७१।। स्वामी साई भक्त को सिध्दी दिलावे। खाली चीलीम मे अगन को जलावे।।७२।। छोडे धुआ करके माया पर्दाफाश। ज्ञानी बनाके दुर करावे अज्ञान की लाश।।७३।। प्रात:काल ले नाम तुम्हारा। सिध्दि बढे अरु योग प्रचारा।।७४।। हठ हठ हठ स्वामी साई हठीले। मार मार दुष्ट वैरी के कीले।।७५।। चल चल चल स्वामीराज साई उजाला। दुश्मन को मार के करावे उसे बेहाला।।७६।। अचल अगम् हे जगद्गुरु साई योगी। सिध्दि देवो हरो सब रस भोगी।।७७।। काटो मार्ग यमपूरी हे माई। तुम बिन मेरा कौन सहाई।।७८।। अजर अमर है तुम्हरी देहा। भक्तन को सुखी करे तेरीही सेवा।।७९।। कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा। है सुप्रसिध्द जगत उजियारा।।८०।। योगी लखे तुम्हारी माया। सत् पारब्रम्ह से ध्यान लगाया।।८१।। बंजर है जमीन जो धान को बुझावे। स्वामी साई अमर नाम से जान दिलावे।।८२।। निरंजन पाद स्पर्श साई की माया। फल फुलाकर भक्त को सुखी बनाया।।८३।। ध्यान तुम्हारा जो कोई ध्यावे। अष्टसिध्दि नव निधि नजदीक पावे।।८४।। प्रज्ञापुर साई नाम है तुम्हारा। पापी दुष्ट अधम को तारा।।८५।। कहे ढोंगी अज्ञानी कहके पास आया। स्वामी साईने काटोंकी शय्यापे सोके दिखाया।।८६।। अगम अगोचर निर्भय नाथा। सदा रहो सन्तन के साथा।।८७।। शंकर रुप सुरेख अवतारा। स्वामीसुत को प्यार से तारा।।८८।। सुन लीजो प्रभु अरज हमारी। कृपासिन्धु योगी ब्रह्मचारी।।८९।। पूर्ण आस दास की कीजे। सेवक जान ज्ञान को दीजे।।९०।।

पतित पावन अधम अधारा। बुझाने हेतु सद्गुरु स्वामी साई अवतारा।।९१।। जय जय जय योगी स्वामी साई भगवान। सदा करो दीन दु:खन् का कल्यान।।९२।। जय जय जय यतीराज फकीरा अविनासी। सेवा करें तुम्हरी सिध्द चौरासी।।९३।। स्वामी साई लेके अंबा अवतारा। भक्तन के दु:ख को देवे छुटकारा।।९४।। तेऊ पार न पावत स्वामी माता। स्थिति रक्षा लय हित संजाता।।९५।। ललित ललाट विलेपित केशर। सिंदुर अक्षत शोभा मनोहर।।९६।। कंठे मंदार हार की शोभा। जाहि देखि सहज हि मन लोभा।।९७।। नाना रत्न जटित सिंहासन। तापर आई साई सजत मनभावन।।।९८।। इन्द्रादिक देवन ते पूजित। जग मृग नाग यक्ष रव कूजित।।९९।। गिरि कैलास निवासि जय जय। कोटिक प्रभा विकासी जय जय।।१००।। त्रिभुवन सकल कुटुम्ब तुम्हारी। अणु अणु ज्योती तुमही उजियारी।।१०१।। है नित्यानंद साई प्राणेश तुम्हारे। त्रिभुवन के जो नित रखवारे।।१०२।। भय भीता सो माता गंगा। लज्जा मय है सलिल तरंगा।।१०३।। ऐसी पावन गंगा तुने सजाई। स्वामी साई के चरण में मोक्ष कमाई।।१०४।। अखिल पाप त्रयताप निकन्दिनि। अंजनी सुत साई स्वास्थ वरदायिनी।।१०५।। काशी पुरी सदा रंजन मन लाई। सिध्द पीठ तेहि आपु बनाई।।१०६।। रिपु क्षय कारिणि जय जय गुरुमाता। वाचा सिध्द करि भक्तन् का चाहता।।१०७।। गोकुल वासा स्वामी साई रुप तुम्हारा। राज्य पद देने हेतु बने सहारा।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय ३ कामवश माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। तुमहि गौरी उमा शंकरी काली। अन्नपूर्णा होवे तुही जगत की पाली।।६।। सब जन की ईश्वरी भगवती। पतिप्राणा परमेश्वरी सती।।७।। अन्न न नीर न वायु अहारा। अस्थि मात्र तन योगी साई तुम्हारा।।८।। स्वामी साई तव जय जय जय उच्चारे। सप्तरिषी सिध्दरिषी गुरुमा पुकारे।।९।। सुर विधि विष्णु पास तब आए। वर देने के वचन सुनाए।।१०।। एक मुढ ठग कहे जो स्वामी। कहे परब्रम्ह किसे नही जानी।।११।। स्वामी साईने गाली देही तिसको। पुछा सपणे में बिध्छु काटा किसको।।१२।। काया को राखे मुझे परब्रम्ह पुछे। परब्रम्ह की भाषा कायाबिन सुझे।।१३।। घोर अकालने जब प्रज्ञापुर को सताया।। स्वामी साई की लिलाने उसे छुडाया।।१४।। कुए तालाब में निरंजन बाबा करे लघुशंका। अमृत की धारा सुकाल का बजावे डंका।।१५।। स्वामी साई रुप अति मनोहर। दुर्गा रुप से भरे जीवन सागर।।१६।। निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूं लोक फैली उजियारी।।१७।। द्वारकामाई के दरबार में खुशी से करे दिपावली। जला के पानी के दिये सब की मती भानावली।।१८।। तुम संसार शक्ति लै कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना।।१९।। अन्नपूर्णा हुई जग पाला। तुम ही आदि सुन्दरी मधुबाला।।२०।। प्रलयकाल

सब नाशन हारी। स्वामी साईकी महिमा रहें दया कारी।।२१।। शिव योग तुम्हारे गुण गावें। ब्रम्हा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें।।२२।। रुप सरस्वती को तुम धारा। दे सुबुध्दि ऋषि मुनिन उबारा।।२३।। धरयो रुप नरसिंह को अम्बा। परगट भई फाडकर खम्बा।।२४।। रक्षा करि प्रल्हाद बचायो। हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो।।२५।। लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाही।।२६।। क्षीरसिन्धु में करत विलासा। दयासिन्धु दिजै मन आसा।।२७।। हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी।।२८।। मातंगी धूमावती माता। भुवनेश्वरि बगला सुख दाता।।२९।। श्री भैरवी तारा जग तारिणी। छिन्नभाल भव दु:ख निवारिणि।।३०।। स्वामी साई ये मातारुप सजाए। सारे जग में सुख का डंका बजाए।।३१।। जगदानन्द साई तुम्हरी महिमा अपार। महाविराट रुप दिखाके करो लिलार।।३२।। एक वारकरी ध्यावत सदा पांडुरंग। परब्रह्म दिखाओ हे स्वामी बजरंग।।३३।। होके विष्णु भक्तन की आस पुरि करी। खडा रहे लेके हाथ कटीवरी।।३४।। कर में दंडक रत्नजडित विराजे। जाको देख काल डर भाजै।।३५।। सोहै मोहत अस्त्र तिरशुला। जाते उठत शत्रु हिय शुला।।३६।। नगरकोट में तुम्ही विराजत। तिहुं लोक में डंका बाजत।।३७।। परी गाढ़ सन्तन पर जब जब। भई सहाय स्वामी साई मातु तब तब।।३८।। प्रज्ञापुरी अरु बासव लोका। तव महिमा सब रहे अशोका।।३९।। ज्वाला में है सुंदर ज्योति तुम्हारी। तुम्हरे गुण गावे सब नरनारी।।४०।। प्रेम भक्ति से जो यश गावें। दु:ख दारिद्र निकट नहिं आवें।।४१।। ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म - मरण ताकौ छुटि जाई।।४२।। शरणागत हुइ कीर्ति तुम्हारी। जय जय जय राजा साई अपारी।।४३।। भई प्रसन्न तुम्ही जगदम्बा। छुडावे जो होई

प्रलम्बा।।४४।। मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो।।४५।। शत्रु नाश कीजै स्वामी महाराजा। सुमिरौं इकचित नाथ साई साजा।।४६।। करो कृपा हे मातु दयाला। ऋध्दि-सिध्दि दै करहु निहाला।।४७।। राजा रायन होवे उदरशुल ग्रासीत। महापिडा से जान हुई कुंठीत।।४८।। स्वामी साईने दिया लोंग और मरिच। स्वाथ्य देके रोग किया खारिज।।४९।। जब लगि जिऊं दया फल पाऊं। तुम्हरो यश मैं सदा भगत सुनाऊं।।५०।। जय जय जय चिरंजिवी साई माता। आदिशक्ति सब जग की त्राता।।५१।। पीतवसन तन पर तव राजै। हाथहिं दंडक रत्न जड़ित विराजै।।५२।। तीन नयन गल चम्पक माला। अमित तेज प्रकटत तव भाला।।५३।। आसन पीतवर्ण हो भव त्राता। भक्तन को सदा वर दाता।।५४।। पीतभूषण पीतहिं चंदन। सुर नर नाग करत सब वन्दन।।५५।। एहि विधी ध्यान हृदय में राखै। वेद पूराण संत एहि भाखै।।५६।। तव पूजा विधि करौ प्रकाशा। जाके किए होत दुख नाशा।।५७।। प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै। पीत वसन स्वामीसाई पहिरावै।।५८।। कुंकम् अक्षत मोदक बेसन। अबीर गुलाल सुपारी चंदन।।५९।। माल्य हरिद्रा अरु फल पाना। सबहिं चढ़ई धरै उर ध्याना।।६०।। धूप दीप कर्पूर की बाती। प्रेम सहित तब करै आरती।।६१।। स्तुति करै हाथ दोऊ जोरे। पुरवहु मातु मनोरथ मोरे।।६२।। दिगंबर साई तब सब सुख खानी। करहु कृपा मोपर जनजानी।।६३।। त्रिविध ताप सब दुख नशावहु। तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु।।६४।। बार - बार मैं बिनवउं तोहीं। अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं।।६५।। पूजनान्त में हवन करावै। सो नर मनवांछित फल पावै ।।६६।। सर्षप होम करै जो कोई। दुःख दरिद्र व्यापै नहिं सोई।।।६७।। फुल अशोक हवन जो करई। ताके

गृह सुख - सम्पत्ति भरई।।६८।। फल सेमर का होम करीजै। निश्चय वाको रिपु सब छीजै।।६९।। गुग्गुल घृत होमै जो कोई। तेहि के वश में राजा होई।।७०।। गुग्गुल तिल संग होम करावैं। ताको सकल बंध कट जावै ।।७१।। ॐ नमो स्वामी साई का जाप करें जो कोई। उस गृहस्वामी के अंदर दुःख पाप न सोई।।७२।। एक मास निशि जो कर जापा। तेहि कर मिटत सकल संतापा।।७३।। यहि जाप नदी के तीर करें जो कोई। साधक फल पावै सब मन लाई।।७४।। दस सहस्त्र जप करै जो कोई। सकल काज तेहि पूरन होई।।७५।। जाप करैं जो लक्षहिं बारा। ताकर होय सुयश विस्तारा।।७६।। जो तव नाम जपै मन लाई। अल्प काल महं रिपुहिं नसाई।।७७।। सप्तरात्रि जो जापहिं नामा। ताको पूरन हो सब कामा।।७८।। नव दिन जाप करे जो कोई। व्याधि रहित ताकर तन होई।।७९।। ध्यान करै जो बन्ध्या नारी। पावै पुत्रादिक फल चारी।।८०।। प्रातः सायं अरु मध्याना। धरे ध्यान होवै कल्याना।।८१।। कहं लगि महिमा कहौं तिहारी। दत्तात्रय साई सदा शुभ मंगलकारी।।८२।। सन की वैशाख पौर्णिमा मास। यह पाठ रचना कियों यह चरण दास।।८३।। आदि माया साई माता जननी। भक्त के भय को सब दिशा से हारिणी।।८४।। तू कल्याणी कष्ट निवारिणी। तू सुख दायिनी विपदा हारिणी।।८५।। मोह विनाशिनी दैत्य नाशिनी। भक्त भाविनी ज्योति प्रकाशिनी।।८६।। आदि शक्ति श्री विद्या रुपा। चक्र स्वामिनी देह अनूपा।।८७।। हृदय निवासिनी भक्त तारिणी। नाना कष्ट विपति दल हारिणी।।८८।। धूमा, बगला, भैरवी, तारा। भुवनेश्वरी, कमला, विस्तारा।।८९।। षोडशी, छिन्नमाता, मांतगी। शिवसाई शक्ति रहे तुम्हारे संगी।।९०।। भारी संकट जब - जब आए। बलराम साईने भक्त बचाए।।९१।।

जिसने कृपा तुम्हारी पाई। उसकी सब कामना बन आई।।९२।। संकट दूर करो मां भारी। भक्तजनों को आस तुम्हारी।।९३।। योग सिध्दि पावें सब योगी। भोगे भोग महा सुख भोगी।।९४।। कृपा तुम्हारी पाके साईनाथा। जीवन सुखमय है बन जाता।।९५।। दुखियों को तुमने अपनाया। महामूढ जो शरण न आया।।९६।। तुमने जिसकी ओर निहारा। मिली उसे सम्पत्ति सुख सारा।।९७।। कुल योगिनी कुण्डलिनी रुपा। लीला माया साई करें अनूपा।।९८।। इच्छा ज्ञान क्रिया का भागी। होता तव सेवा अनुरागी।।९९।। जो भानुसाई तेरा गुण गावे। उसे न कोई घोर कष्ट सतावे।।१००।। आदित्य साई तेरी लीला है मन भाया। जोशी के चौपाई पे पग छाप दिखाया।।१०१।। नुरी बाबा के संग बोली करे मस्त। काश्यप साई दु:ख का करे अस्त।।१०२।। सर्व मांगल्ये गले पुष्प मालिनी। तुम हो सर्व शक्ति संचालिनी।।१०३।। आया संन्यासी साई शरण तुम्हारी। विपदा हरी उसी की सारी।।१०४।। नामा - कर्षिणी चित्त-कर्षिणी। सर्व मोहिनी सब सुख वर्षिणी।।१०५।। महिमा तव सब जग विख्याता। तुम हो दयामयी सुंदर जगन्माता।।१०६।। प्रात: काल उठ जो पढ़ , दुपहरिया या शाम। दुख दरिद्रता दूर हो, सिध्द होय सब काम।।१०७।। तिल तंडुल संग क्षीर मिलावै। हवन कराके इच्छित काम पुरावै।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय ४ शत्रुदमन माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। आनंद, सुख, सम्पत्ति देते हो। कष्ट भयानक हर लेते हो।।६।। लक्ष्मी, दुर्गा, तुम हो काली। तुम्ही शारदा चक्र कपाली।।७।। मूलाधार, निवासिनी जय जय। सहस्त्रार गामिनी माँ जय जय।।८।। योगी राज साई सब चक्र भेदने वाला। पुरन करें योग को तुही रखवाला।।९।। सबको पार लगाती कृपाकारी माँ। सबको दया दिखाती कृपाछत्र माँ।।१०।। प्राणी पर दया करना रवी साईने सिखाया। योग माया से शिकारी को खडा मुर्त बनाया।।११।। देख के लिला हरण चाटे गुरु के पाव। कहें शिकारी दिखाओ मुझपे दया भाव।।१२।। सर्व विपती हर सर्वाधारे। समर्थ साई कुटिल बुद्धी को मारे।।१३।। भक्तजनों को दरस दिखाओ। संशय भय सब शीघ्र मिटाओ।।१४।। सबसे लघु उपाय यह पाठ जानो। सिध्द करे ज्ञान भास्कर साई मन में जो ठानों।।१५।। आनंदमयी स्वामी साई शाकम्बरी रुप पुजायो। वही सारे रसों की तुष्टी दिलायो।।१६।। शाकम्बरी स्वामिसाई अति सुखकारी। पूर्ण ब्रम्ह सदा दुख दारीद्रय हारी।।१७।। स्वामिसाई के दरबार में ज्ञानरुपी तेरा थाट। शाकम्भरी की कृपा से सुख का बहेगा पाट।।१८।। कारण करण जगत की दाता। आनंद चेतन विश्व विधाता।।१९।। अमर जोत है ज्ञानरंजी साई

तुम्हारी। ज्ञान सागर मे डुबोवे भक्तन हितकारी।।२०।। ज्ञान राशी हो कृपा दीन दयाली। शरणागत घर भरती खुशहाली।।२१।। ज्ञान राज साई ब्रम्ह प्रकाशी। जल थल नभ हो अविनाशी।।२२।। कमल कान्तिमय शांती अनूपा। उजियारा मन मर्यादा जोत स्वरूपा।।२३।। जब जब भक्तों ने है ध्याई। परम जोत अपनी प्रकट हो आई।।२४।। संमुख भैरव वीर खडा है। दानव दल से खुब लडा है।।२५।। शिव शंकर प्रभु भोले भंडारी। सज्जन कहें स्वामी साईको मुरारी।।२६।। संग हाथ ध्वजा हनुमान विराजे। माया संसार मे श्री साई संग साजे।।२७।। दश विध नव दुर्गा आदि। ध्याते तुम्हें परमार्थं वादि।।२८।। बली बजरंगी तेरा चेरा। चले यश गाता सवेरा।।२९।। पांच भुतों का खेल है प्यारा। निरंजन साईने प्रेम से सवारा।।३०।। शोक पात से मुनि जन तारे। शोक पात जन दुख निवारे।।३१।। भोग भंडारा हलवा पुरी। ध्वजा नारियल तिलक सिंदूरी।।३२।। रूद्राक्ष माला राजा साई को लगे प्यारी। ये ही नजराना ले दुख निवारी।।३३।। अंधे को तुम नयन दिखाते। कोढी काया सफल बनाते।।३४।। बांझन के घर बाल खिलाते। निर्धन को धन खूब दिलाते।।३५।। भूमंडल से जोत प्रकाशी।। भिशग् साई मृत्यु को नाशी।।३६।। मधुर मधुर मुस्कान तुम्हारी। जन्म जन्म पहचान हमारी।।३७।। चरण कमल तेरे बलिहारी। जय जय जय स्वामी साई ब्रम्हचारी।।३८।। मैं सेवक हूं दास तुम्हारा। जननी करावे भव निस्तारा।।३९।। यह सौ बार पाठ करे कोई। क्षेत्रज्ञ साई कृपा अधिकारी होई।।४०।। संकट को ब्रम्हेंद्र साई निवारे। शोक मोह शत्रुन संहारे।।४१।। निर्धन सुख सम्पति पावे। श्रध्दा भक्ति से तुम्हारे गुण गावे।।४२।। नौ रात्रों मे दीप जगावे। सपरिवार मगन हो गावे।।४३।। दशहरे को प्रभु रामचंद्र को

पुजावे। भक्तीभाव से ज्ञान सागर लुटावे।।४४।। कृष्ण अष्टमी को भक्तीजागर करावे। गोपाल काला को ज्ञान दीप जलावे।।४५।। स्वामी साई भक्तन की माई। घोर संकट को तुम झट से बुझाई।।४६।। विकराल रुप में माता काली को पाया। स्वामी साई ने डर को दूर भगाया।।४७।। दशभुजा सुखदायक माता। दुष्टदलन जग में विख्याता।।४८।। ऐसा सुंदर आदिरूप दिखाया। देख के भक्तन को रोना आया।।४९।। रोमांच खडे थरथर काया। स्वामी साई तुम्हारी अजब हो माया।।५०।। भक्त को माताने कोक से लगाया। पिलावे शीशु को ब्रम्हांड की माया।।५१।। पतित तारिणी हे जग पालक। कल्याणकारी बने सबका मालिक।।५२।। तुम समान दाता नहिं दूजा। विधिवत करें भक्तजन पूजा।।५३।। नाम अनेकन ज्ञानी साई तुम्हारे। भक्तजनों के संकट टारे।।५४।। स्वामी साई के बीच में अजब है रिश्ता। आनंदनाथ कहे भगवान ने भेजा फरिश्ता।।५५।। महिमा अगम वेद यश गावैं। नारद शारद पार न पावैं।।५६।। भू पर भार बढयौ जब भारी। तब तब तुम प्रकटी महतारी।।५७।। आदि अनादि अभय वरदाता। विश्वविदित भव संकट त्राता।।५८।। कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा। उसको सदा अभय वर दीन्हा।।५९।। ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा। काल रुप लखि तुमरो भेषा।।६०।। करुण पुकार सुनी भक्तन की। पीर मिटावन हित जन - जन की।।६१।। दीन विहीन करै नित सेवा। पावैं मनवाछिंत फल मेवा।।६२।। प्रेम सहित सो कीरति गावैं। भव बंधन सो मुक्ती पावै।।६३।। स्वामी साई चरित्र मनसे पढही। स्वर्गलोक बिनु बंधन चढ़हीं।।६४।। सेवक दीन अनाथ अनारी। भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी।।६५।। देहु सुबुध्दि हरहु सब संकट। होहु भक्त के आगे परगट।।६६।। जय ॐ करि जय हुंकारे।

महाशक्ति जय अपरम्पारे।।६७।। कृष्ण साई कलियुग दर्प विनाशि। सदाही भक्तजनों का भयनाशि।।६८।। आनंद करणि आनंद निधाना। देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना।।६९।। सकल जीव तोहिं परम प्यारा। सकल विश्व तोरे आधारा।।७०।। अजा एक रुपा बहु रुपा। अकथ चरित्र अरु शक्ति अनूपा।।७१।। कोटि ब्रम्ह शिव विष्णु कामदा। जयति अहिंसा धर्म जन्मदा।।७२।। कितनी स्तुति करुं अखंडीत। सारा जग मन मोहे पंडीत।।७३।। तुम्हरी कृपा पावे जो कोई। रोग शोक नहिं ताको होई।।७४।। जो यह पाठ करे जगदीशा। तापर कृपा करहि सर्वेशा।।७५।। पवन भरे कटोरी होवे हनुमंता। स्वामी साई के रुप में आनंद ही आनंद लाता।।७६।। सच्चा राम सेवक, तु ही दास प्रेमदाता। मरुता पवन कुमार, अंजनीसुत तु ही साईनाथा।।७७।। जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।७८।। रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा।।७९।। महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।८०।। ऐसे सुंदर स्वामी साई हनुमाना। सिखाओ गुरुभक्ती रहे ज्योती समाना।।८१।। कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।८२।। विद्यावान गुनी अति चातुर। गुरुसाई लिला करने में सदा आतुर।।८३।। स्वामी साई चरित्र सुनाये रसिया। सब दीन भगतों के संग मन बसिया।।८४।। सूक्ष्म रुप धरि अंतर्ज्ञान दिखावा।। विकट रूप धरि बहिर्ज्ञान पिलावा।।८५।। भीम रुप धरे असुर बुध्दि संहारे। गुढ़ साई सुखी जगत को तारे।।८६।। लायो संजीवन भगत को जियाये। दर्श मात्र से दवा रोगी को पिलाये।।८७।। द्वादश वर्षे मंगळ वेढी बास करें। संचारी होके मुढ़ विद्या को मारे।।८८।। जैसे पैलतीर मांझी नाव से तारे। वैसे अप्पा टोळ का जीवन स्वामी

साई सवांरे।।८९।। आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक ते कांपै।।९०।। भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।९१।। नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर स्वामी साई बीरा।।९२।। संकट ते वीर साई छुडावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।९३।। चारों जुग परताप तुम्हारा। है परमसिध्द जगत उजियारा।।९४।। अष्ट सिध्दि नव निधि के दाता। अंजुमन सुखावे भव संकट त्राता।।९५।। तुम्हरें भजन भक्तन को पावैं। जनम - जनम के कठोर दुख बुझावैं।।९६।। जय जय जय निरंजन गोसाई। कृपा करहु गुरुदेव के नाई।।९७।। जय जय भगवान बालाजी रुप में अवतारा। भाविक स्वामी साई सोहत जगत उद्धारा।।९८।। प्रेमराज भैरव बलवाना। कोतवाल कप्तानी हनुमाना।।९९।। दोनो द्वारपे खडे भगवाना। रक्षा करें भक्तन की तुम सब जाना।।१००।। प्रज्ञापुर शिर्डी अवतार लिया है। भक्तों का तुने उध्दार किया है।।१०१।। डाकनि शाकनि अरू जिन्दनीं। मशान चुडैल भूत भूतनीं।।१०२।। जाके भय ते सब भग जाते। पापी दुराचारी यहाँ सब घबराते।।१०३।। चौकी बंधन सब कट जाते। सुकुन मिले आनंद मनाते।।१०४।। सच्चा है दरबार तुम्हारा। शरण पडे सुख पावे सारा।।१०५।। रुप तेज बल अतुलित धामा। सन्मुख सोहैं सिय संग रामा।।१०६।। कनक मुकूट मणि तेज प्रकाशा। सबकी होवत पूरन आशा।।१०७।। निरंजन स्वामी साई तुम्हारी हो जय जय कार। दमन करावे शत्रु को देके फटकार।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय ५ पापमोचक माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। अदभुत कला दिखाई कैसी। कलयुग ज्योति जलाई जैसी।।६।। ऊँची ध्वजा पताका नभ में। स्वर्ण कलश हैं उन्नत जग में।।७।। धर्म सत्य का डंका बाजे। सियाराम शीव शंकर राजे।।८।। अदभुत् लीला तुम्हारी ही साजे। स्वामी साई को भगत मन से भजे।।९।। आन फिराया मुगदर घोटा। भूत जिन्द पर पडते सोटा।।१०।। राम लक्ष्मण सिय हृदय कल्याणा। बाल रुप में प्रगटे हनुमाना।।११।। ऐसा मंदिर सोहे तेरे दरबारा। ध्यान करके दुख से देवे छुटकारा।।१२।। जय स्वामी साई कृपालु हे देवा। पुरा परिवार लगन से करे तेरी सेवा।।१३।। लड्डू चूरमा मिश्री मेवा। अर्जी दरखास्त लगाऊं देवा।।१४।। जय बाबा जी जन जन ऊच्चारे। कोटिक जन तेरे आये द्वारे।।१५।। लांघी माया को बाबा साई सुधि लाए। जैसे हनुमंत लक्ष्मणहित संजीवन लाए।।१६।। अनुसुया नन्दन दुख भव भंजन। अत्री ललन सदा सुख सन्दन।।१७।। सिया राम के नाम पियारे। सब बाबा साई के नाम पुकारे।।१८।। संकट दुख भंजन भगवाना। दया करहु हे कृपा निधाना।।१९।। जय नरसिंह साई रुप कल्याणा। जो होवे मनोरथ पूरावे कामना।।२०।। मेवा अरु मिष्ठान प्रविणा। भेंट चढावें धनि अरु दीना।।२१।। लिला करे नित न्यारे न्यारे।

रिध्दि सिध्दियां रहे तेरे द्वारे।।२२।। तेरी कृपा दृष्टि से पर्जन्य होवे। बंजर जमीन को तु ही खुलवावे।।२३।। जो जन प्रज्ञापुर शिर्डी में आते। जन्म जन्मों के पाप तुरंत मिट जाते।।२४।। वर पावन लेकर घर जाते। निर्मल होके आनंद मनाते।।२५।। क्रूर कठिन संकट भाग जावे। सत्य धर्म पथ राह दिखावे।।२६।। कल्याण स्नेही सच्चे दिल से भावे। सुख समृध्दि रिध्दि सिध्दि पावे।।२७।। चिरंजीवी साई करुणा के सागर। भक्त कष्ट हर सब गुण के आगर।।२८।। जगमग सिर पर रेशीम मुकुट सुहावन। कानन कुंडल अति मन भावन।।२९।। गजारुढ़ संग सेना भारी। खुशी में चली स्वामी साई की सवारी।।३०।। छत्र चंवर पंखा सिर डोले। भक्त वृंद मिलि जय जय बोले।।३१।। भगवी पताका उड रही गगन में। नाचत भक्त मगन ही मन में।।३२।। जय स्वामी साई की आनंद सवारी। स्वर्ग लोक पहुंचे भुमंडल भारी।।३३।। भक्त कामना पूरन साई स्वामी। शिर्डी प्रज्ञापुर के हम सेवक नामी।।३४।। इच्छा पूरन करे ताके द्वारे। दुख संकट हो भयानक सारे।।३५।। जो जिस इच्छा से चले आते। वे सब मन वांछित फल पाते।।३६।। रोगी सेवा में जो तेरे धाम आते। शीघ्र स्वस्थ होकर अपने घर जाते।।३७।। ऐसा तेरा दरबार सुहाना। यतीश्वर साई नाम हे मनमाना।।३८।। भूत पिशाच जिन्न बैताला। भागे देखत तेरा रुप विशाला।।३९।। रुह काया मन की दारुण है पीडा। भिशक राज साई स्वास्थ्य हेतु करे क्रीडा।।४०।। कठिन काज जग में हैं भाते। लेकर तेरे नाम पूरन सब होते।।४१।। तन मन धन से जो सेवा करते। उनके कष्टन को प्रभु साई तुम ही हरते।।४२।। हे करुणामय स्वामी साई मेरे। पडा हुआ हूं चरणों में तेरे।।४३।। कोई तेरे सिवा न मेरा। मुझे एक आश्रय प्रभु तेरा।।४४।। लज्जा मेरी हाथ तिहारे। पड़ा हूं चरण

तेरे सहारे।।४५।। शिर्डी प्रज्ञापुर अवतार लिया है। भक्तों का दु:ख दूर किया है।।४६।। जो जो तेरे द्वारे आते। मन वांछित फल पा घर जाते।।४७।। महिमा भूतल पर है छाई। भक्तों ने है लीला गाई।।४८।। प्रात: काल अभ्यंग स्नान करावै। उबटन और सुगंधित तैल लगावै।।४९।। चंदन हिना फुल चढ़ावे। पुष्पन की माला गले पहनावै।।५०।। ले कपूर आरती उतारे। सारे भगत अपनी झोली पसारे।।५१।। दीनों के सब कष्ट कट जाते। हर्षित हो भगत अपने घर जाते।।५२।। इच्छा पूरण करते जन की। होती सफल कामना मन की।।५३।। अब मोर कष्ट तु ही बुझावत। समृद्धी देके मजे मे नचावत।।५४।। मेरु पर्वत पर ज्योति तुम्हारी। पिंडी रुप में सुंदर अवतारी।।५५।। देवी देवता अंश दियो है। शिर्डी प्रज्ञापुर धाम् कियो है।।५६।। करी तपस्या श्री राम चंद्र को पाऊं। श्री नाथ साईका भक्त कहलाऊं।।५७।। महा विष्णु रूप से कल्की बनकर। होंगे संत स्वामी साई रुप पाकर।।५८।। दो संन्यासी करे चेष्टा गुरु की भारी। कहे मुढ ज्ञानी स्वामी साई सवारी।।५९।। फसावे जन को, लेके ढोंगीपण जारी। दर्शन दिखाके योगी का, माया भ्रांती को बुझारी।।६०।। ब्रम्हा, विष्णु, शंकर सोहत सारे। हनुमत, भैरो प्रहरी प्यारे।।६१।। सुंदर मुख है भावक कोमल। चरणामृत तुम्हारे चरणों का निर्मल।।६२।। दिया फलित वर मां मुस्काई। करन लिला शिर्डी प्रज्ञापुर आई।।६३।। स्वामी साई करे तीन संध्या का शिंगार। पढ गायत्री खोले माया दिवार।।६४।। सुरज को देके अर्घ्य पढ़े गायत्री मंत्र। सजाऐ ब्रम्हांड को देके ज्ञान यंत्र।।६५।। स्वामी साई को गायत्री रुप में पाया। पुरे विश्व का ज्ञान झट से स्फुराया।।६६।। जयति जयति स्वामी साई गायत्री अम्बा। काटहु कष्ट न करहु कभी विलम्बा।।६७।। तव ध्यावत विधि विष्णु महेसा। लहत

अगम सुख शांति हमेसा।।६८।। तू ही ब्रम्हज्ञान उर धरिणि। जग तारिणि मगमुक्ति प्रसारिणि।।६९।। जन तन संकट नासनि हारी। हरनि पिसाच प्रेत दै तारी।।७०।। संभु नेत्र नित निरत करैया। भव भय दारुण दर्प हरैया।।७१।। सर्व काम क्रोधादिक माया। ममता मत्सर मोह अदाया।।७२।। अगम अनिष्ट हरन महासक्ती। सहज भरण भक्तन उर भक्ती।।७३।। ॐ रुप कलि कलुष विभंजनि। भूर्भुव स्वः स्वतः निरंजनि।।७४।। शब्द 'तत् सवितुः' हंस सवारी। अरु 'वरेण्यम्' ब्रम्हदुलारी।।७५।। 'भर्गो' जन तुन क्लेस नसावत। प्रेम सहित 'देवस्य' जु ध्यावत।।७६।। 'योनः' नित नवभक्ति प्रकासन। 'प्रचोदयात्' पुंज अधनासन।।७७।। अक्षर अक्षर महं गुन रुपा। अगम अपार सुचरित अनूपा।।७८।। जो गुन शास्त्र न तुम्हारो जाना। शब्द अर्थ जो सुना न नाना ।।७९।। जब लगि ब्रम्ह कृपा नहिं तेरी। रहहि तबहि लगि ज्ञान की देरी।।८०।। प्रकृति ब्रम्ह सक्ती बहुतेरी। महा व्याह्रती नाम घनेरी।।८१।। ॐ तत्व निर्गुण जग जाना। भूः महि रुप चतुर्दल माना।।८२।। भुवः भुवन पालन सुचिकारी। स्वः अक्षर सोलह दल धारी।।८३।। स्वामी साई कहे 'तत्' विधिरुप जगत दुःखहारी। 'स' रस रुप ब्रम्ह सुखकारी।।८४।। 'वि' रचित गंध सिसिर संयुक्ता। 'तुर' मित घट घट जीवन मुक्ता।।८५।। 'वृ' नत सब्द सुविग्रह कारन। 'रे' स्वसरीर तत्त्वयुत धारन।।८६।। 'ण्यम्' सर्वत्र सुपालन कर्ता। 'भर्' त्रिभुवन मुद मंगल भर्ता।।८७।। 'गो' संयुक्त गंध अविनासी। 'दे' तन बुध्दि बचन सुख रासी।।८८।। 'व' सत् ब्रह्म बचन सुबाहु स्वरुपा। 'स्य'तनु लसै सतदल अनुरुपा।।।८९।। 'धी' जनु प्रकृति सब्द नित कारन। 'म' नित ब्रह्मरुपिणी धारन।।९०।। 'हि' जहि सर्व ब्रह्म परकासन। 'धियो' बुध्दि बल विद्या

वासन।।९१।। 'यो' सर्वत्र लसत थल जल निधि। 'नः' नितः तेज पुंज जग बहु विधि।।९२।। 'प्र' बल अनिलकाय नित कारन। 'चो' परिणूर्ण सिव श्री धारन।।९३।। 'द' मन करत प्रकट अघ सक्ती। 'यात' प्रबेस करे हरि भक्ती।।९४।। जयति जयति जय जय जगधात्री। जय जय महामंत्र गायत्री।।९५।। ऐसे देवे ब्रम्ह बिंदू का अमृत पान। गायत्री रुप से तीन संध्या में करें ध्यान।।९६।। श्रीनाथ साई कहें तू ही राम राधिका सीता। तु ही सत् श्रीकृष्ण निसृत श्री गीता।।९७।। आदिशक्ति तू भक्ति भवानी। जगत जननि फल वांछित दानी।।९८।। तू ही दुर्गा दुर्ग विनासिनी। उमा रमा बैकुण्ठ निवासिनी।।९९।। तू श्री भक्ती भैरवी दानी। तुही मातु मंगल मिरडानी।।१००।। जेते मंत्र जगत में आहीं। पर गायत्री सम कोइ नाहीं।।१०१।। श्री अमर साई कहें गायत्री ज्ञान। देके सुकन दुर करें अज्ञान।।१०२।। खोले अज्ञान कोठी, तोडके ताला। दिखावे ब्रम्हज्योती जगद्गुरु साई रखवाला।।१०३।। जाहि ब्रम्ह हत्यादिक लागै। गायत्रिहि जप सो दूर भागै।।१०४।। धनि हो धनि त्रैलोक्य वंदिनी। जय हो जय श्री ब्रम्हनंदिनी।।१०५।। करे संचार सुर्य मंडल ओढ के चुनरी। जय जय गुढ सखोल महा मंत्र गायत्री।।१०६।। ऐसी महिमा दिव्य गायत्री मंत्र की बताई। सारे जगत का अमिरस गर्भ मे छिपाई।।१०७।। ऋण को मिटाने करे धन का फवारा। स्वामी साई के वर ने इस पापी को तारा।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय ६ मोहन माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। नमो विष्णु साई भगवान खरारी। कष्ट नशावन अखिल बिहारी।।६।। प्रबल जगत में शक्ति तुम्हारी। त्रिभुवन फैल रही उजियारी।।७।। जो चाहे सो भक्त को दीजे। श्री विष्णु साई ललन का बेडा पार कीजे।।८।। सुंदर रुप मनोहर सूरत। सरल स्वभाव मोहनी मूरत।।९।। तन पर पिताम्बर अति सोहत। बैजन्ती माला मन मोहत।।१०।। स्वामी साई ने विराट रुप दिखाया। महाविष्णु जानो गगन में समाया।।११।। शंख चक्र कर गदा बिराजे। देखत दैत्य असुर दल भाजे।।१२।। सत्य धर्म मद लोभ न गाजे। काम क्रोध मद लोभ न छाजे।।१३।। संत भक्त सज्जन मनरंजन। दनुज असुर दुष्टन दल गंजन।।१४।। सुख उपजाय कष्ट सब भंजन। दोष मिटाय करत जन सज्जन।।१५।। भोसले सरकार होवे दर्द से व्याकुल। करके दवा सुखावे घरकुल।।१६।। लेके स्वामी साईका सच्चा आदेश। फल फुलादे उसे सावंतवाडी के देश।।१७।। वमन करके दिखाई चरण पादुका। फर्माए आनंदनाथ को मठ करे साधु का।।१८।। ऐसे महत् नारायण करे जो पालण। सारे प्राणी मात्रा को जो करे धारण।।१९।। पाप काट भव सिंधु उतारण। कष्ट नाशकर भक्त उबारण।।२०।। करत अनेक रुप स्वामी साई धारण। केवल आप ही

हो मेरे भक्ति के कारण।।२१।। धरणि धेनु बन तुमहिं पुकारा। तब तुम रुप राम का धारा।।२२।। भार उतार असुर दल मारा। रावण आदिक को संहारा।।२३।। पुरान काल में वाराह रुप बनाया। हिरण्याक्ष को मार गिराया।।२४।। सदाही स्वामी साईका विचार भावत। करे भाग्यवान, भक्त को पावत।।२५।। जिसमे मन हे बाती, आत्मा हो ज्योती। करें उजागर जीवन हो परम ख्याती।।२६।। धर मतस्य तन सिंधु बनाया। चौदह रतनन को निकलाया।।२७।। अमिलख असुरन द्वंद मचाया। रुप मोहिनी आप दिखाया।।२८।। देवन को अमृत पान कराया। असुरन को छवि से बहलाया।।२९।। मधुकैटभ जो अति बलवाना। बाहुयुध्द विष्णु से ठाना।।३०।। युद्ध भुमी में दोनों को गिराया। सारे पृथ्वी को पाप बुद्धी से बचाया।।३१।। महाविष्णु का रुप स्वामीसाई हे जाना। तुही जगद्गुरु सब का भगवाना।।३२।। कूर्म रुप धर सिंधु मझाया। मंद्राचल गिरि तुरत उठाया।।३३।। ऐसे रुप कली में संत का धारा। माया के सागर में इस नय्या को तारा।।३४।। शंकर का तुम फंद छुड़ाया। भस्मासुर को रुप दिखाया।।३५।। वेदन को जब असुर डुबाया। कर प्रबंध उन्हे ढुंढवाया।।३६।। मोहित बनकर खलहि नचाया। उसही कर से भस्म कराया।।३७।। सत् लीला जागर संसार में किया। अग्नी को जलाके पापी बुद्धी को मिटाया।।३८।। तुमने ध्रुव प्रहलाद उबारे। हिरणाकुश आदिक खल मारे।।३९।। हरहु सकल संताप हमारे। कृपा करहु हरि सिरजन हारे।।४०।। देखहुं मैं निज दरश तुम्हारे। दीन बंधु भक्तन हितकारे।।४१।। चहत आपका सेवक दर्शन। करहु दया अपनी मधुसूदन।।४२।। जानू नहीं योग्य जप पूजन होय यज्ञ स्तुति अनुमोदन।।४३।। शीलदया संतोष सुलक्षण। विदित नहीं व्रतबोध विलक्षण।।४४।। करहुं

आपका किस विधि पूजन। कुमतिविलोक होत दुख भीषण।।४५।। करहुं प्रणाम् कौन विधि सुमिरण। कौन भांति मैं करहु समपर्ण।।४६।। सुर मुनि करत सदा सेवकाई। हर्षित रहत परम गति पाई।।४७।। पाप दोष संताप नशाओ। भव बंधन से मुक्त कराओ।।४८।। सुत संपति दे सुख उपजाओ। निज चरनन का दास बनाओ।।४९।। निगम सदा ये विनय सुनावै। पढै सुनै सो जन सुख पावै।।५०।। राजे मल्हार बडोदयाके सरदार। कहे स्वामी साई देखो मेरा घरबार।।५१।। जाने को देश बडी बडी शक्कल लगाई। चोळाप्पा तात्या की युक्ती फोल ठहराई।।५२।। छोड के मेना आए अक्कलकोट दरबार। स्वामी साई ने वही रचाया संसार।।५३।। मन में कहें नही मल्हार को भाव। ना रखेंगे बडोदा में हमारे पाव।।५४।। यशवंतराव एक मल्लारीका चेला। दिखावे स्वामी साईको रत्नों का थैला।।५५।। कलि कालकी भडकी ज्वाला। संतापे स्वामी साई मारों उसे ताला।।५६।। स्वामी साई की लिला है अपरंपारा। भक्तों को मोह से दिलावे छुटकारा।।५७।। कुछही दिनों में अंग्रेजोने फटकारा। अधिकारी के मृत्यु का संशय उसपे सवारा।।५८।। स्वामी साई रहे त्रिकाल ज्ञानी। भक्तों का जीवन मन से ही जानी।।५९।। चरण रखे काली शिला पे जब। अमर चरण पादुका कहने लगे सब।।६०।। ज्ञान गर्व से स्वामी साई को दंभी पुछे भारी। अज्ञान छुडाके बनावे ब्रम्ह निराकारी।।६१।। स्वामी साई ब्रम्ह का अर्थ उछारे। विष्णुबुवा उसे जानके खुद को सुधारे।।६२।। शंकरराव एक मामलेदार अधिकारी। मिली जहागिरी अंग्रेजोंसे तव भारी।।६३।। हुऐ पुत्र पौत्र धन धान्य सुख संपत। जन्म भोग रहे ब्रम्हबाधा से ग्रसीत।।६४।। किये व्रत गाणगापुर क्षेत्री बहुत सारे। गुरु कहे सपनेमे जावे

प्रज्ञापुरे।।६५।। स्वामी साई सेवा ने किया मुक्त। वही अवलीया बंधन धुडावे सशक्त।।६६।। प्रज्ञापुरी में बतावे जरा व्याधी होवे भारी। सुनके अरज निकले दर्गा की ओर सवारी।।६७।। पहुंचे कब्रस्थान सोये गड्डे मे स्वस्थ। दुर करावे आपत्काल दिखावे लिला मस्त।।६८।। निंब और मरिच खाके न होवे चिंतातुर। भगावे सारी बाधा रहे काया से दुर।।६९।। बडी खुशी से स्थापन किया ज्ञान मठ। ज्ञान देके रक्षण करावे योगीरुपी हठ।।७०।। श्री दलवीर भक्त हितकारी। सुन लीजै प्रेम अरज हमारी।।७१।। स्वामी का ध्यान बहुत है प्यारा। सभी भक्तजनों को बनावे हितकारा।।७२।। ध्यान धरे शिवजी मन माही। ब्रम्हा इन्द्र पार नहि पाही।।७३।। जय जय जय दलनाथ कृपाला। सदा को शिष्य प्रतिपाला।।७४।। शिष्य तुम्हार सबमे सनमाना। तुम्हारी प्रभा तिहुं पुर जाना।।७५।। मुरगोड ग्रामी नाम मल्हार दिक्षित। स्वामी साई के वर से पुत्र होवे साक्षित।।७६।। एक दिन पुजा कर हेतु गज बनाया। दलनाथने मिट्टी के गज में प्राण फुकाया।।७७।। गजगौरी व्रत कथा सफल बनाई। कृपा आशीर्वाद से सुंदर लीला जमाई।।७८।। स्वामी साई का बाळप्पा नामेक भावन। गुरु राज ने लिंग दिया करके पावन।।७९।। भक्ती का ध्वज फहराओ ऐसे सुनाया। राजा साई दलवीर अजब तेरी माया।।८०।। तव भुज दण्ड प्रचंण्ड कृपाला। दैत्य बुद्धी मारी सज्जन प्रतिपाला।।८१।। तुम अनाथ के नाथ गोसांई। दीनन के हो सदा सहाई।।८२।। ब्रम्हादिक तव पार न पावैं। सदा ईश तुम्हारो यश गावैं।।८३।। चारिऊ वेद धर्म के लाखे। तुम भक्तन की लज्जा राखे।।८४।। उदर पिडा में बाळप्पा सनातन गुरु को ध्यावे। स्वामी साई के वर से जहर भी निर्विष होवे।।८५।। दत्त साई नाम है अपरम्पारा। सारे पुरान वेद

तोहे पुकारा।।८६।। शेष रहत नित नाम तुम्हारा। महि का भार शीश पर धारा।।८७।। महालक्ष्मी धर अवतारा। सब विधि करत पाप को छारा।।८८।। तरते हुए चाँद भाई खोज में रहे मगन। दिलाके अश्व साई ने किया मन भावन।।८९।। पत्थरपे रगड कें निकाले अगन् और निर। झुरका मारके चिलीम मजे में रहे साई पिर।।९०।। खंडोबा कें मंदीर में बाबा ने लिया निवारा। म्हाळसापतीने आनंद में साईनाम से पुकारा।।९१।। शिर्डी में नांदे अवलिया जय साई दुलारा। वाली बने जगत का भक्तों को सवारा।।९२।। मेणा में लेके स्वामी को चले राजे भोसले। शिवपूरी में ठहराके गुस्से में उपर कोसले।।९३।। शिवपूरी मे हुआ अग्नी का परम ज्ञान। सूरज आवे धरती पे विश्व को देवे विज्ञान।।९४।। स्वामी साई की लिला जैसे संजिवन सागर। नए नए रतन उपजे जैसे हो क्षीरसागर।।९५।। स्वामी साई लेके भगत पहुचे परमधाम। आन लेके भक्ति की दिखावे सुंदर शाम।।९६।। बरगद पेड निचे फुलावे सारा ब्रह्मांड। सिखाने भगत को करावे बहुत कांड।।९७।। दिव्य दृष्टी देके मेहेरबान। भगत को सुखी करावे यही उसका फरमान।।९८।। काला कलुटा है माया का सागर।कमल फुला के दिखावे संजीव क्षिरसागर।।९९।। तप किया अघोरी कडवी निम कें निचे। गोपाळबुवा अवलिया के सच्चे गुरु साचे।।१००।। साईराम आत्मा पोषण हारे। जय जय जय अनुसुया के अमित दुलारे।।१०१।। ज्ञान ह्रदय दो ज्ञान स्वरुपा। नमो नमो जय जगपति भूपा।।१०२।। बोल के नारायण तेली खुश हुआ साई का दरबार। फुँके ग्यान राधा को मजे में झुमें बारंबार।।१०३।।सत्य शुध्द देवन मुख गाया। बजर दुंदुभी शंख बजाया।।१०४।। आवागमन मिटै जो नाम लेत तेरा। सत्य वचन माने यह सद्गुरु का फेरा।।१०५।। तीनहूं काल ध्यान जो

ल्यावैं। तुलसी दल अरु फूल चढ़ावैं।।१०६।। अंत समय सद्गुरु पुर जाई। जहां जन्म नाथ साई भक्त कहाई।।१०७।। मोहन प्यारे मोहित करे जगत को सारे। स्वामी साई मोहनधारी विश्व को मोहित करे।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय ७ इच्छापूर्ती पदोन्नती माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। स्वामी साई नाम अनेकन तुम्हारे। कृष्ण के अवतार में धरती को तारे।।६।। जय यदुनन्दन जय जगवन्दन। जय वसुदेव देवकी नन्दन।।७।। जय यशुदा सतु नन्द दुलारे। जय प्रभु भक्तन के दृग तारे।।८।। जय नटनागर नाथ नथइया। कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया।।९।। जैसे बालकनै नवनीत चुरावे। वैसे गुरु भक्त की भक्ती को रिझावे।।१०।। जैसे गोपाल अंगुलीपे गिरीवर धारो। वैसे गुरु साई दीनन के दु:ख निवारो।।११।। गोल कपोल चिबुक अरुणारे। मृदु मुस्कान मोहिनी डारे।।१२।। नील जलज सुन्दर तनु सोहै। छवि लखि सुर नर मुनि मन मोहै।।१३।। करि गोपिन संग रास विलास। सबकी पूरण करि अभिलाषा।।१४।। महि से मृतक छहों सुत लायो। मातु देवकी शोक मिटायो।।१५।। वैसे संसार के सुख सुकुन लायो। वक्त के भाग्य को खुद लिखायो।।१६।। असुर बुध्दि कलिके मारयो। भक्तन के तब कष्ट निवारियो।।१७।। जैसे कृष्ण दीन सुदामा के दु:ख हारयो। तंदुल तीन मूठि मुख डारयो।।१८।। इस भगत दीन की अरज सुनीयो। हमारे दु:ख निरंजन साई तुम हरीयो।।१९।। लखी प्रेम की महिमा भारी। ऐसे श्याम साई दीन हितकारी।।२०।। निज गीत के ज्ञान सुनाए। भक्तन ह्रदय सुधा वर्षाए।।२१।।

मीरा थी ऐसी मतवाली। विष पी गई बजा कर ताली।।२२।। ऐसे स्वामी साई भगत हुए तेरा मतवाला। मनमे ठाने तु ही एक जीवन रखवाला।।२३।। निज माया तुम विधिहिं दिखायो। उरते संशय सकल मिटायो।।२४।। तव शत निन्दा करि तत्काला। जीवन मुक्त भयो शिशुपाला।।२५।। अस अनाथ के नाथ कन्हैया। डूंबत भंवर बचावत नइया।।२६।। सुन्दरदास आस उर धारी। दयादृष्टि कीजै बनवारी।।२७।। ये भगत ने तुम्हारी आस उरी धारी। दयादृष्टि कीजै मोपर सबसे भारी।।२८।। नाथ सकल मम कुमति निवरो। क्षमहु बेगी अपराध हमारो।।२९।। खोलो पट अब दर्शन दीजै। बोलो स्वामी साई महाराज की जै।।३०।। जय जय पूरण ब्रम्ह विहारी। दुष्ट दलन लीला अवतारी।।३१।। मंगळवेढी ग्रामी भक्तनाम बसप्पा तेली। डुबे दु:ख दरिद्र मे भाग्य रहे खाली।।३२।। दिन एक कंट शय्या पे लेटे गुरुको करे नमन। बाले स्वामी अवलिया करे कष्ट का धावन।।३३।। रात दो प्रहर स्वामी करें गमन। देख के गुरु को बसप्पा पहुंचे कानन।।३४।। घणे जंगल में गुरु स्वामी साई करें लिला। घोर अंधकार में सर्पीनका खेल खेला।।३५।। आदेश करे तेली को लेवे नागन को हाथ। क्षणभर में बसप्पा को दिया भाग्य ने साथ।।३६।। करके कनक शलाका दुर हुआ अभाग। स्वामी साई के चमत्कार से खोले उसका भाग।।३७।। स्वामी साई की लीला जो कोई गावै। बिन श्रम सकल पदारथ पावै।।३८।। छेली ग्रामी से प्रभु अक्कलकोट आए। वही अपनी लीला का डंका बजाए।।३९।। गोपाल ने खेल खेल में गोटीयां खेली। छोटे बछडोंकी ज्ञान गुफा खोली।।४०।। स्वामी साई को गोपाल के रुप में पाया। लिला भक्ति से फुला न समाया।।४१।। बालक संग खेलत सुख पायो। दश दिशाओ में मौज मचायो।।४२।।

शरणागत हरन को सुख दिलायो। दो शिकारियोंसे अभय करायो।।४३।। हठ से व्याध ने गुरु को फटकारा। मुर्ति बनाके स्वामी साईने किया चमत्कारा।।४४।। दुखारु व्याध गुरु याचना करे। आर्शिवाद देके जीवन आनंद से भरे।।४५।। माता पिता की महिमा गुनगुनाये। भक्तन के मन में प्रेम ज्योत जलाये।।४६।। खग मृग गोमाता को संजीवन दिलाये। भूतदया का सच्चा सबक सिखाये।।४७।। जय मधु कैटभ दैत्य हनैया। महाविष्णु रुप में जन को सुख दिलैया।।४८।। देह शुध्द संतन कर संगा। बाढ़े प्रेम भक्ति रस रंगा।।४९।। देहु दिव्य वृंदावन बासा। छूटै मृग तृष्णा जग आशा।।५०।। बाँझ गो माता को दोहन कराके दिखावे चमत्कार। व्यंकसा को दुध देके सद्गुरु ने किया उपकार।।५१।। श्याम साई भजि बारंबारा। सहज ही हो भवसागर पारा।।५२।। इन सम देव न दूजा कोई। दीन दयालु न दाता होई।।५३।। यह सब कथा कहे जग के कल्पान्तर। तनिक न दो ब्रम्हांड नायक को अंतर।।५४।। बर्बरीक विष्णु अवतारा। भक्तन हेतु मनुज तनु धारा।।५५।। जैसे वसुदेव देवकी प्यारे। यशुमति मैया नंद दुलारे।।५६।। वैसे स्वामी साई भक्तन को प्यारे। भगत को कहे डरो ना दुलारे।।५७।। मधुसुदन गोपाल मुरारी। बृजकिशोर गोवर्धन धारी।।५८।। सियाराम श्री हरि गोविंदा। दीनपाल श्री बाल मुकुंदा।।५९।। दामोदर रणछोड बिहारी। नाथ द्वारकाधीश मुरारी।।६०।। नरहरी रुप प्रल्हाद प्यारा। खंभ फारि हिरनाकुश मारा।।६१।। राधा वल्लभ रुक्मिणी कांता। गोपी वल्लभ कंसा हनंता।।६२।। मनमोहन चितचोर कहाए। माखन चोरि चोरि कर खाए।।६३।। मुरलीधर यदुपति घनश्यामा। कृष्ण पतितपावन अभिरामा।।६४।। मायापति लक्ष्मीपति सोहे ईशा। पुरुषोत्तम केशव तुही जगदीशा।।६५।। विश्वपति त्रिभुवन

उजियारा। दीन बंधु भक्तन रखवारा।।६६।। स्वामी साई मन मंदिर में साजे। जीवन दीप जलाके भक्ति रस को पीजे।।६७।। नारद - शारद ऋषि योगिन्दर। परब्रम्ह साई जप करे निरंतर।।६८।। हरे मुरारी कलियुग में स्वामी साई। ले अवतार भक्तन को करे सुखाई।।६९।। हृदय मांहि करि देखु विचारा। स्वामी साई भजे तो होवे निस्तारा।।७०।। जैसे बिजली चमके घणे बादल में। वैसे तरकीब सुझावे भक्त के जीवन में।।७१।। तरकीब सुझाके दुर करे माया जंजाल। दुर करे दारिद्रय ऋण रुपी भयाण अकाल।।७२।। जाके श्याम साई नाम अधारा। सुख लहहि दुख दूर हो सारा।।७३।। श्याम साई सुलोचन है अति सुंदर। मोर मुकुट सिर तन पिताम्बर।।७४।। गल वैजयन्तिमाला सुहाई। छवि अनूप भक्तन मन भाई।।७५।। श्याम साई सुमिरहु दिन - राती। स्वामी साई दुपहरि अरू परभाती।।७६।। रसना स्वामी साई नाम पी ले। जी ले श्याम साई नाम के हाले।।७७।। संसारी सुख रुपी भोग खिलेगा। अंत श्याम साई सुख योग मिलेगा।।७८।। श्याम साई हैं तन के सावले। मन के गोरे भोले भाले।।७९।। स्वामी साई संत भक्तन हितकारी। रोग - दोष अघ नाशै भारी।।८०।। प्रेम सहित जे अमृत नाम पुकारा। भक्त लगत श्याम साई को प्यारा।।८१।। वृध्द बाल जेते नारी नर। मुग्ध होवे सुने स्वामी साई के स्वर।।८२।। जिसने श्याम साई का स्वरुप निहारा। भव भय बंधन से पाया छुटकारा।।८३।। जय प्रभु साईराम सुखसागर। जय मुनीश गुण ज्ञान दिवाकर।।८४।। कश्यप कुल बिकट रणधीरा। ब्राम्हण तेज मुख संत शरीरा।।८५।। ब्रम्हांडसुत शक्ती की माया। तेज प्रताप सकल जग छाया।।८६।। मास चैत्र पज्ञापुर स्वामी अवतारा। द्वितीया शुक्लपक्ष में मनभावन रुप धारा।।८७।। तेज ज्ञान मिल नर तनू

धारा। अक्कलकोट घर ब्रम्ह अवतारा।।८८।। चोळप्पा सदा देवे अपनी भक्ति की आस। घर में समाधी लेके सदा रहे उसके पास।।८९।। स्वामी साई को परशुराम अवतार में मिलाया। याचक को मन ही मन सुख दिलाया।।९०।। मंजु मेखला कटि मृगछाला। रुद्र माला बर वक्ष विशाला।।९१।। पीत वसन सुंदर तनु सोहें। स्वामीराज साईरुप में मोहे।।९२।। वेद - पुरण - श्रुति - स्मृति ज्ञाता। रुद्र रुप तुम जग विख्याता।।९३।। दाया हाथ भाग्य हेतु उठावा। वेद - संहिता बांए सुहावा।।९४।। विद्यावान गुण ज्ञान अपारा। शास्त्र - शस्त्र दोऊ पर अधिकारा।।९५।। भुवन चारिदस अरू नवखंडा। चहुं दिशि सुयश प्रताप प्रचंडा।।९६।। गुरु धनु भंजक रिपु करि जाना। तब समूल नाश ताहि ठाना।।९७।। कर जोरि तब राम रघुराई। विनय कीन्ही पुनि शक्ति दिखाई।।९८।। शस्त्र विद्या देह सुयश कमावा। गुरु प्रताप दिगंत फिरावा।।९९।। चारों युग तव महिमा गाईं। सुन मुनि मनुज दनुज समुदाईं।।१००।। अब लौं लीन समाधि नाथा। सकल लोक नावइ नित माथा।।१०१।। चारों वर्ण एक सम जाना। समदर्शी प्रभु तुम भगवाना।।१०२।। ललहिं चारि फल शरण तुम्हारी। देव दनुज नर भूप भिखारी।।१०३।। सरस्वती रुप में स्वामी साई को दिखावत। अमिरस का ज्ञान बुद्धी में मिलावत।।१०४।। जय श्री सकल बुध्दि बलरासी। जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी।।१०५।। जय जय वीणाकर धारी। करती सदा सुहंस सवारी।।१०६।। सुंदराबाई स्वामीजी की परम भक्तन। चरण पादुका देके करावे उसे पावन।।१०७।। स्वामी निरंजन साई जब करावे निरंतारा। पदोन्नती देके विषाद से करे छुटकारा।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय ८ बंधन ऋणमोचक माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। जग में पाप बुध्दि जब होती। तबही धर्म की फीकी ज्योती।।६।। तबहि मातु का निज अवतारा। पाप हीन करती महि तारा।।७।। बाल्मीकि जी थे हत्यारा। तव प्रसाद जानै सब संसारा।।८।। रामायण ज्योती रचे बनाई। आदि कवी की पदवी को पाई।।९।। स्वामी साईपर विश्वास राखे जो भाई। संसार रुपी किचड़ में कमल उपजाई।।१०।। संजिवना रुप आदि विद्वाना। तेरी कृपा दृष्टी से ही जगद् में संजाना।।११।। राखू लाज जननी अब मेरी। विनय करुं भांति बहुतेरी।।१२।। मैं अनाथ तेरी अवलंबा। कृपा करउ जय जय जगदंबा।।१३।। मालोजीराजे स्वामी साईके भक्त धारी। सदाही वेद अध्ययन की आशा सवारी।।१४।। मुंबईचे विष्णुबुवा एक ब्रम्हचारी। वेद ज्ञान हेतु सारे जग संचारी।।१५।। कलियुग में स्वामी साई का रुप है भाया। सदा राखे भक्तन पर अपनी कृपा छाया।।१६।। स्वामी साईको मातु रुप में जाना। पाप दुर कर पुण्यात्मा बनाना।।१७।। चंड मुण्ड असुर विख्याता। पापी बुद्धी जगद् में प्रख्याता।।१८।। मार के उनको तुही भवानी। करके माला गले में धारनी।।१९।। रक्तबीज से समरथ पापी। सुरमुनि हृदय धरा सब कांपी।।२०।। काटेउ सिर जिम कदली खम्बा। बार बार बिनऊं

जगदंबा।।२१।। जगप्रसिध्द जो शुंभनिशुंभा। छण में वधे ताहि तू अम्बा।।२२।। इस रूप में माई साईको बाना। सच्चे हृदय से माँ के रूप को जाना।।२३।। को समरथ तव यश गुन गाना। निगम अनादि अनंत बखाना।।२४।। रक्त दन्तिका और शताक्षी। नाम तुम्हारे हे सोहत कामाक्षी।।२५।। भूत प्रेत बाधा या दु:ख में। हो दरिद्र अथवा बिकट संकट में।।२६।। नाम जपे मंगल सब होई। संशय इसमें कदापी न साई।।२७।। पुत्रहीन जो आतुर भाई। सबै छांड़ि पूजें एहि माई।।२८।। करै पाठ नित्य साई ईशा। होय पुत्र सुंदर दिव्य गुणैशा।।२९।। धुपादिक नैवेद्य चढ़ावै। संकट रहित अवश्य हो जावै।।३०।। भक्ति स्वामी साईकी करैं हमेशा। निकट न आवै ताहि कलेशा।।३१।। भगत पाठ करें बारंबारा। स्वामी साई की कृपा रहे अपरंपारा ।।३२।। स्वामी साईको सुंदर शारदा रुप मे पाया। सारे विश्व को ज्ञान से झुलाया।।३३।। जय जय जय शारदा महारानी। आदि शक्ति तुम जग कल्याणी।।३४।। दो सहस्त्र बर्षहि अनुमाना। प्रगट भई शारद जग जाना।।३५।। मैहर नगर विश्व विख्याता। जहां बैठी शारद जग माता।।३६।। त्रिकुट पर्वत शारदा वासा। मैहर नगरी परम प्रकाशा।।३७।। शरद इंदु सम बदन तुम्हारो। रूप चतुर्भुज अतिशय प्यारो।।३८।। कोटि सूर्य सम तन द्युति पावन। राज हंस तुम्हारो शचि वाहन।।३९।। वीणा पुस्तक अभय धरिणी। जगत्मातु तुम जग विहारिणी।।४०।। हरिहर करहिं शारदा बंदन। वरुण कुबेर कराहिं अभिनंदन।।४१।। स्वामी साई दुर्विद्या को करे अस्तावत। सुविद्या को बुद्धी के संग नचावत।।४२।। स्वामी साईको राधा के रुप माना। भक्तीका रस उससे ही जाना।।४३।। रास विलासिनी रस विस्तारिनी। सहचरि सुभग यूथमन भावनि।।४४।। नित्य किशोरी राधा गोरी। श्याम

प्राणधन अति जिय भोरी।।४५।। करुणा सागर हिय उमगिनी। ललितादिक सखियन की संगिनी।।४६।। नित्य श्याम तुमरौ गुण गावें। राधा - राधा कहि हरषावें।।४७।। संतत सहचरि सेवा करहीं। महा मोद मंगल मन भरहीं।।४८।। रसिकन जीवन प्राण अधारा। राधा नाम सकल सुख सारा।।४९।। अगम अगोचर नित्य स्वरुपा। ध्यान धरत निशदिन ब्रज भूपा।।५०।। नित्यधाम गोलोक विहरिनी। जन रक्षक दु:ख दोष नसावनि ।।५१।। राधा कृष्ण कृष्ण कहैं राधा। एक रुप दोऊ प्रीती अगाधा।।५२।। श्री राधा मोहन मन हरनी। जन सुख दायक प्रफुलित बदनी।।५३।। प्रफुलित होत दर्श जब पावें। विविध भांति नित विनय सुनावें।।५४।। श्री राधा रस प्रीती अभेदा। सारदा गान करत नित वेदा।।५५।। राधा नाम लेह जो कोई। सहजहि दामोदर बस होई।।५६।। राधा किशन परब्रम्ह के रूप में पायो। स्वामी साई अमिरस का स्वाद दिलायो।।५७।। किशन की सखी जगत में कहलाया। वैसे स्वामी साई ने भगत को झुलाया।।५८।। स्वामी साई को विन्ध्येश्वरी माता में देखा। गम के अंधेरे को दुर करके फेका।।५९।। नमो नमो विन्ध्येश्वरी नमो नमो जगदम्बा। भक्त के काम को करती नही विलम्बा।।६०।। जय जय जय विन्ध्यचल रानी। आदि शक्ति जग विदित भवानी।।६१।। दीनन के दुख हरत भवानी। नहिं देख्यो तुम सम कोऊ दानी।।६२।। सब कर मनसा पुरवत माता। महिमा अमित जगत विख्याता।।६३।। रमा राधिका श्यामा काली। तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली।।६४।। उमा माधवी चण्डी ज्वाला। बेगि मोहि पर होहु दयाला।।६५।। तू ही हिंगलाज महारानी। तू ही शीतला अरु विज्ञानी।।६६।। दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता। तू ही लक्ष्मी जग सुख दाता।।६७।। तू ही जान्हवी अरु उत्राणी। हेमावती अम्ब

निरवाणी।।६८।। चौसट्टी देवी कल्यानी। गौरी मंगला सब गुण खानी।।६९।। अष्ट भुजी वाराहिनी देवा। करत विष्णु शिव जाकर सेवा।।७०।। पाटन मुम्बा दन्त कुमारी। भद्रकालि सुन विनय हमारी।।७१।। वज्र धारिणी शोक नाशिनी। आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी।।७२।। ऐसे रुप में भवानी को पूजत। स्वामी साई के रुप को मन में भावत।।७३।। विन्ध्य देवी रुप में स्वामी साईको भजा। भाविक हुए भगत जीवन की लेवे मजा।।७४।। हरिभाऊ, लक्ष्मण और श्रीधर तीनो थे यार। व्यापार में उन्हे खोट हुई फार।।७५।। दु:खीत होके, स्वामीजीसे मन्नत करें बारंबार। ऋण से मुक्त होंगे तो आयेंगे तेरे दरबार।।७६।। एकही रात में बहुत हुआ मुनाफा। दर्शन लेने भागे प्रज्ञापुर में ताफा।।७७।। स्वामी साई को देखके मन खुशाया। मुझे पादुका लाओ ऐसे स्वामी साई ने फरमाया।।७८।। पेहेन के चौदा दिन हरिभाऊ को सुत बनाया। बालक कराके खुशी से फुला न समाया।।७९।। जो जन ध्यान तुम्हारो लावै। सो तुरतहिं वांछित फल पावै।।८०।। स्वामी सुत का भाई सदा रहे बिमार। स्वामी साई की कृपा दृष्टी से ना रहे दिवार।।८१।। स्वामी साई की पादुका भुजंग के सिर पर डाली। आदेश से स्वामी सुत की गद्दी ना रहे खाली।।८२।। जापर कृपा मात तव होई। तो वह करै चहै मन जोई।।८३।। कृपा करहु मोपर महाज्ञानी। सिध्द करिए अब यह अमृत बानी।।८४।। जो नर धरै माँ साई का ध्याना। भगत का होय सदा ही कल्याना।।८५।। विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै। जो स्वामी साईका जाप लगन से करावै।।८६।। जो नर कहं ऋण होय अपारा। सो नर जाप करे लक्षबारा।।८७।। निश्चयही ऋण मोचन होई क्षणभर में। स्वामी साई ध्यान करावे दिनभर में।।८८।। तव स्तुती जो नर पढ़ पढ़ावै। इस जग में सो अति सुख पावै।।८९।।

जाको व्याधि सतावे भाई। जाप करत सब दूर भगाई।।९०।। जो नर अति बन्दी महं होई। बारह लक्ष जाप कर सोई।।९१।। निश्चय बन्दी ते छुटि जाई। सत्य वचन यह मानहु भाई।।९२।। स्वामी साई नित्यही मेरे घरमे विराजे। अन्नपुर्णा देवी रुप में सदाही साजे।।९३।। नित्य आनंद कारिणी माता। वर - अरु अभय भाव प्रख्याता।।९४।। जय सौंदर्य सिंधु जग - जननी। अखिल पाप हर भव - भय हरनी।।९५।। काशी पुराधीश्वरी माता। माहेश्वरी सकल जग - त्राता।।९६।। बृषभारुढ़ नाम रुद्राणी। स्वामी साई अन्नपूर्णा पद सेवत ऋषीमुनी।।९७।। सभी देवता कहे तुही शिरोमणी। स्वामी साईजी बोले तुही गिरीनंदिनी।।९८।। मालीक साईका चलते फिरते नाम जो जापे। धन धान्य का भांडार भगत के घर मे थापे।।९९।। प्रकटी गिरिजा नाम धरायो। अति आनंद भवन महं छायो।।१००।। स्वामी साई गावे सदाही तुम्हारे भजन। विश्व में फुलावे सुख का चमन।।१०१।। नारद ने तब तोहिं भरमायहु। ब्याह करन हित पाठ पढायहु।।१०२।। ब्रह्मा वरुण कुबेर गनाये। देवराज आदिक तुम्हारो गुण गाये।।१०३।। तजि संकोच कहहु निज इच्छा। देहौं मैं मन मानी भिक्षा।।१०४।। माला पुस्तक अंकुश सोहै। कर महं अपर पाश मन मोहे।।१०५।। कमल विलोचन विलसित बाले। देवि कालिके! चण्डि कराले।।१०६।। तुम कैलास मांहि ह्वै गिरिजा। विलसी आनंदसाथ सिंधुजा।।१०७।। **ॐ ह्रीं श्रीं स्वामी साई क्लिं नमः ये मंत्र पढे जो कोई।** घोर बंधन ऋण को पलभर में दूर भगाई।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय ९ बालकरक्षा माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। स्वामी साई गुण गावत तेरे। सदा ही भगत की झोली सुख से भरे।।६।। चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा। तब आनन महं करत निवासा।।७।। अन्नपूरणे! सदापूरणे। अज - अनवद्य अनंत आपूर्णे।।८।। स्वर्ग - महालक्ष्मी कहलाई। मर्त्य - लोक लक्ष्मी पदपाई।।९।। पाठ महा मुद मंगल दाता। भक्त मनो वांछीत निधिपाता।।१०।। आलंदि ग्रामीके नरसिंह सरस्वती आए निकट। कहे मन में छुडाओ शंका का सावट।।११।। स्वामी साईने मंत्र द्वारा आज्ञा भेजी। तत्काल लागी समाधी बनावे योगीजी।।१२।। स्वामी साईको शीतला रुप में पाया। रक्षण करे बालक की यह फरमाया।।१३।। जय जय जय शीतला भवानी। जय जग जननि सकल गुणखानि।।१४।। गृह गृह शक्ति तुम्हारी राजित। पूरण शरद चंद्र सम साजित।।१५।। विस्फोटक से जलत शरीरा। शीतल करत हरत सब पीरा।।१६।। मातु शीतला तव शुभ नामा। सबके गाढ़ आवहिं कामा।।१७।। शोकहरी शंकरी भवानी। बाल - प्राणरक्षी तुही सुख दानी।।१८।। ग्रहादी बाधा बालक को सतावै। स्वामी साई की दिव्य दृष्टी से मिटावै।।१९।। नजर बाधा टोनादी घाले फेरा। निर्भय कराके नृसिंह साई ने मारा।।२०।। ध्यान लगाके गुरु साई को खिलावे पान। रंजन

कराके दिलावे स्वास्थ्य का भान।।२१।। हो हो करके स्वामी साई मारे फुंकर। त्रिशुल लेके बुझावे अघोरी का भवंडर।।२२।। दिन रात करावे बालक की रक्षा। आई माई भाई स्वामी साई रहे दक्षा।।२३।। स्वामी साई ने धरा जगत का भार। दीन भगत को सुखाए बारंबार।।२४।। शुचि मार्जनी कलश करराजै। मस्तक तेज सूर्य समराजै।।२५।। चौसठ योगिनी संग में गावैं। वीणा ताल मृदंग बजावै।।२६।। नृत्य नाथ भैरो दिखरावैं। सहज शेष शिव पार न पावैं।।२७।। धन्य - धन्य धात्री महारानी। सुर नर मुनि तब सुयश बखानी।।२८।। ज्वाला रूप महा बलकारी। दैत्य एक विस्फोटक भारी।२९।। घर - घर प्रविशत कोई न रक्षत। रोग रुप धरि बालक भक्षत।।३०।। हाहाकार मच्यो जग भारी। सक्यो न जब संकट टारी।।३१।। तब मैया धरि अद्भुत रूपा। कर में लिए मार्जनी सूपा।।३२।। विस्फोटकहिं पकड़ि कर लीन्ह्यो। मुसल प्रहार बहुविधि कीन्ह्यो।३३।। ऐसे कर्म से शीतला ने मारा फटकारा। फैला के किर्ती बजे बजावे नगारा।।३४।। तुम्ही शीतला जग की माता। तुम्हीं पिता जग की सुखदाता।।३५।। नमो सुख करणी दुख हरणी। नमो - नमो जगतारीणि संधारीणि।।३६।। नमो नमो त्रैलोक्य वंदिनी। दुख दारिद्रादिक निकन्दनी।।३७।। निश्चय मातु शरण जो आवै। निर्भय मन इच्छित फल पावै।।३८।। कोढ़ी निर्मल काया धारै। अंधा दृग - निज दृष्टि निहारै।।३९।। वंध्या नारि पुत्र को पावै। जन्म दरिद्र धनी होई जावै।।४०।। पड़ा क्षर तब आस लगाई। रक्षा करहु शीतला माई।।४१।। ऐसा शीतला रुप मन को भाया। स्वामी साईने कथकर सुनाया।।४२।। स्वामी साई की लीला है अपरंपार। बजता रहे उनका डंका बारंबार।।४३।। माई आई जननी रूप तुम्हारा। निरंजन साई को इस रूप में निहारा।।४४।।

स्वामी साईने तुलसी महात्म्य कहकर सुनाया। मती गुंग होके विष्णु जाप कराया।।४५।। नमो नमो तुलसी महारानी। महिमा अमित न जाय बखानी।४६।। दियो विष्णु तुमको सनमाना। जग में छायो सुयश महाना।।४७।। विष्णुप्रिया जय जयति भवानि। तिहूं लोक की हो सुखखानी।।४८।। भगवत पूजा कर जो कोई। बिना तुम्हारे सफल न होई।।४९।। जिन घर तव नहिं होय निवासा। उस पर करहिं विष्णु नहिं बासा।।५०।। कार्तिक मास महात्म्य तुम्हारा। ताको जानत सब संसारा।।५१।। तव पूजन जो करैं कुंवारी। पावै सुंदर वर सुकुमारी।।५२।। कर जो पूजा नितप्रति नारी। सुख सम्पत्ति से होय सुखारी।।५३।। वृध्दा नारी करै जो तुलसी पूजन। मिले भक्ति होवे पुलकित मन।।५४।। श्रध्दा से पूजै जो कोई। भवनिधि से तर जावै सोई।।५५।। स्वामी साईकी कृपा लिला महान। सुनके कथा तुम्हारी फुले सारा जहान।।५६।। कथा भागवत यज्ञ करावै। माता तुम बिन नहीं यश पावै।।५७।। तुम्हीं मात यंत्रन तंत्रन में। सकल काज सिधि होवै क्षण में।।५८।। औषधि रुप आप हो माता। सब जग में तव यश विख्याता।।५९।। नमो नमो सुख सम्पत्ती देनी। नमो नमो अध काटन छेनी।।६०।। नमो नमो भक्तन दुःख हरनी। नमो नमो दुष्टन मद छेनी।।६१।। नमो नमो भव पार उतारनि। नमो नमो परलोक सुधारनि।।६२।। नमो नमो निज भक्त उबारनि। नमो नमो जनकाज संवारनि।।६३।। जयति जयति जय तुलसी माई। ध्याऊ तुमको शीश नवाई।।६४।। स्वामी साई कह महात्म्य तुम्हारा। तुम्हारी लिला से सिर नमे हमारा।।६५।। निज जन जानि मोहि अपनाओ। बिगड़ कारज आप बनाओ।।६६।। करु विनय मैं मात तुम्हारी। पूरण आशा करहु हमारी।।६७।। करहु मात यह अब मोपर दया। निर्मल होय सकल ममकाया।।६८।।

जानूं नहिं कुछ नेम अचारा। शमहु मात अपराध हमारा।।६९।। स्वामी साई ताकी पुजाविधी बतावे। मलीन काया को सुकाया करावे।।७०।। प्रथम दिव्य गंगाजल मंगवावे। फिर सुंदर मंगल स्नान करावे।।७१।। चंदन अक्षत पुष्प चढ़ावे। धूप दीप नैवेद्य लगावे।।७२।। करे आचमन गंगा जल से। ध्यान करे हृदय निर्मल से।।७३।। पाठ करे गृह रखपाली की। दिव्य स्तवन करे माता तुलसी की।।७४।। स्वामी साई कन्हैया बाके बिहारी जी। दिया जलाके नमन करो माता तुलसी जी।।७५।। स्वामी साई तेरा जगत में बोलबाला। दीन भगत का सच्चा तुही रखवाला।।७६।। सबका मालिक हावे निरंजन साई। प्रेम से नहलावे इस बंदे को माई।।७७।। त्रिकाल ज्ञान होवे तुम्हारे ठाई। दिव्य दृष्टी से भगत को देवे मलाई।।७८।। तुम्हारी क्रिया होवे विश्व में चालक। सबक देने हेतु बने सबका मालिक।।७९।। वासुदेव फडके हुए तब क्रांतीकारी। देश को छुडाने की शपथ लेवे भारी।।८०।। लेने वर शक्ती का पहुंचे दरबार। कहे गुरुसे सामने रखके तलवार।।८१।। मौनी स्वामी साईने खड्ग फेका। देखके लिला फडके मनसे झुका।।८२।। स्वामी साई ने किया संतोषी माँ का जय जय कार। भगत की सहायता करावे तेरे ही दरबार।।८३।। हे मैय्या ईश्वर चरणों में शोभा बढ़ाइयो। ऐसी लिनता मेरे मनमे लाइयों।।८४।। श्री लक्ष्मीराज साईने संतोषी माँ का रुप दिखाया। प्रफुल्लीत होके मन ही मन में सुखाया।।८५।। जय संतोषी माँ जग जननी। खल मति दुष्ट दैत्य दल हननी।।८६।। माता - पिता की रहौ दुलारी। कीरति केहि विधी कहूं तुम्हारी।।८७।। क्रीट मुकुट सिर अनुपम भारी। कानन कुण्डल की छवि प्यारी।।८८।। आप चतुर्भुज सुघड़ विशाला। निकट है गौ अमित दुलारा।।८९।। तुम्हरे दरश करत क्षण माई।

दु:ख दरिद्र सब जाय नसाई।।९०।। ब्रह्मा ढिंग सरस्वती कहाई। लक्ष्मी रुप विष्णु ढिंग आई।।९१।। शिव ढिंग गिरजा रुप बिराजी। महिमा तीनों लोक में गाजी।।९२।। शक्ति रुप प्रगट जन जानी। रुद्र रुप भई मात भवानी।।९३।। दुष्ट दलन हित प्रगटी काली। जगमग ज्योति प्रचंड निराली।।९४।। रुप शारदा हंस मोहिनी। निरंकार साकार दाहिनी।।९५।। प्रगटाई चहुंदिश निज माया। कण कण में है तेज समाया।।९६।। पृथ्वी सूर्य चंद्र अरू तारे। तव इंगित क्रम बध्द है सारे।।९७।। पालन पोषण तुम्हीं करता। क्षण भंगुर में प्राण हरता।।९८।। चित्त लगाय तुम्हे जो ध्याता। सो नर सुख सम्पत्ति है पाता।।९९।। बंध्या नारि तुमहिं जो ध्यावै। पुत्र पुष्प लता सम वह पावै।।१००।। पति वियोगी अति व्याकुल नारी। तु वियोग अति व्याकुल यारी।।१०१।। कन्या जो कोई तुमको ध्यावै। अपना मन वांछित वर पावै।।१०२।। शीलवान गुणवान हो मैया। अपने जन की नाव खिवैया।।१०३।। गुड और चना भोग तोहि भावै। सेवा करै सो आनंद पावै।।१०४।। नारि सुहागिन व्रत जो करती। सुख सम्पत्ति सों गोदी भरती।।१०५।। सात शुक्र जो व्रत मन धारे। ताके पूर्ण मनोरथ सारे।।१०६।। तुम्हरो ध्यान लगे लगावे। बालक की रक्षा सदा करावे।।१०७।। पाठ करके बभुत लगावे। हनुमंत भैरव रक्षा कवच धरावे।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय १० व्याधीहरण माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। जय जय जय अम्बे कल्याणी। कृपा करौ मोरी महारानी।।६।। ऐसी महिमा माता तुम्हारी बतावै। संतोषही संतोष जीवन मे पावै।।७।। संतोषी माँ का वर है गहन। पाके गुरुमैय्या जीवन होवे सधन।।८।। जो जन शरण माता तेरी आवै। ताके क्षण में काज बनावै।।९।। स्वामी साई बतावे माता का राज। पूरण करावे भक्तों के काज।।१०।। स्वामी साई तुम्हरी महिमा बढाई। सातो समंदर पार करके नही मिलाई।।११।। स्वामी साई का वचन जग में भावे। दीन भगत को अपने चरण में लावे।।१२।। रक्षण करावे स्वामी साई जगदंबा। छुडावे अघोरी को न करे विलंबा।।१३।। तात्या नामक शिष्य स्वामी साईका महान। बेजार हुए पिडा से मृत्यु के समान।।१४।। ध्यान में लावे सद्गुरु साथ होवे वृषभ। मौत को चकवाके जीवन करावे सुलभ।।१५।। स्वामी साई कहे वृषभ होवे बिमार। तात्या की मौत को फसवाके दिखावे लिलार।।१६।। संतोष संतोष संतोष जहा देखे संतोष। माँ कश्यप साई निरंजन वही देवे संतोष।।१७।। स्वामी साई रहे हिमालय की गोद में। गंगा महिमा बतावे निकली शिवजी की जटा में।।१८।। जय भागीरथि सुरसरि माता। कलिमल मूल दलनि विख्याता।।१९।। जय जय जय हनु सुता अघ हननी।

पितामह भीषम की माता जग जननी।।२०।। वाहन मकर विमल शुचि सोहै। अमिय कलश कर लखि मन मोहै।।२१।। जड़ित रत्न कंचन आभूषण। हिय मणि हार, हरणितम दूषण।।२२।। जग पावनि त्रय ताप नसावनि। तरल तरंग तंग मन भावनि।।२३।। जो गणपति अति पूज्य प्रधाना। तिहुं ते प्रथम गंग अस्नाना।।२४।। ब्रह्म कमंडल वासिनी देवा। श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवा।।२५।। साठी सहत्र सगर सुत तारयो। गंगा सागर तीरथ धारयो।।२६।। अगम तरंग उठयो मन भावन। लखि तीरथ हरिद्वार सुहावन।।२७।। तीरथ राज प्रयाग अक्षैवट। धरयो मातु पुनि काशी करवट।।२८।। धनि धनि सुरसिर स्वर्ग की सीढी। तारणि अमित पितृ पद पीढी।।२९।। जब जग जननी चल्यो लहराई। शुंभ जटा महं रह्यो लहराई।।३०।। मुनि भागीरथ शंभुहि ध्यायो। तब इक बूंद जटा से पायो।।३१।। ताते मातु भई त्रय धारा। मृत्यु लोक नभ अरु पातारा।।३२।। गई पाताल प्रभावित नामा। मंदाकिनी गई गगन ललामा।।३३।। पान करत निर्मल गंगाजल। पावत मन इच्छित अनंत फल।।३४।। पूरब जन्म पुण्य जब जागत। तबहिं ध्यान गंगा महं लागत।।३५।। ध्यान में स्वामी साई गंगा तीर्थ पिलावे। कोटी जन्म का पाप झट में धुलावे।।३६।। हो कोई हत्या हो कोई महापातक। पान करने पे सब मायासे झटक।।३७।। जई पगु सुरसरि हेतु उठावहि। तइ जगि अश्वमेध फल पावहि।।३८।। शत योजनहु से जो ध्यावहिं। निश्चय विष्णु पद लोक पावहिं।।३९।। जिमि धन मूल धर्म अरु दाना। धर्म मूल गंगाजल पाना।।४०।। बुध्दि हीन विद्या बल पावै। रोगी रोग मुक्त होके खुशी से झुलावै।।४१।। गंगा गंगा जो नर कहहीं। भूखे नंगे कबहु न रहहीं।।४२।। महां अधिक अधमन कहं तारें। भए नर्क के बंद किवारे।।४३।। जो

नर जपै गंग शत नामा। सकल सिध्द पूरण कामा।।४४।। सब सुख भोग परम पद पावहिं। आवागमन रहित ह्वै जावहिं।।४५।। धनि मइया सुरसरि सुखदैनी। धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी।।४६।। ध्यान में स्वामी साई गंगा धारा फवारे। दीन दुखारु भगत के जीवन संवारे।।४७।। स्वामी साई यमुना के गुण बतावे। सुन के भगत के घोर पापा मिटावे।।४८।। नर्मदा का महात्म्य स्वामी साईने बताया। सुनके जीवन त्वरीत पावन कराया।।४९।। जय जय जय नर्मदा भवानी। तुम्हरी महिमा सब जग जानी।।५०।। अमरकंठ से निकली जगन्माता। सर्व सिध्दि नव निधि की दाता।।५१।। कन्या रुप सकल गुण खानी। जब प्रकटीं नर्मदा भवानी।।५२।। सप्तमी सुर्य मकर रविवारा। अश्विनी माघ मास अवतारा।।५३।। वाहन मकर आपको साजैं। कमल पृष्प पर आव विराजैं।।५४।। ब्रम्हा हरि हर तुमको ध्यावैं। तब ही मनवांछित फल पावैं।।५५।। दर्शन करत पाप कटि जाते। कोटि भक्तगण नित्य नहाते।।५६।। जो नर तुमको नित ही ध्यावै। वह नर रुद्र लोक को जावैं।।५७।। मगरमच्छ तुम में सुख पावैं। अंतिम समय परमपद पावैं।।५८।। कल - कल ध्वनि करती हो माता। पाप ताप हरती हो माता।।५९।। पूरब से पश्चिम की ओरा। बहती माता नाचत मोरा।।६०।। शिव गणेश भी तेरे गुण गावैं। सकल देव गण तुमको ध्यावैं ।।६१।। कोटि तीर्थ नर्मदा किनारे। ये सब कहलाते दु:ख हारे।।६२।। मनोकामना पूरण करती। सर्व दुख माँ नित ही हरती।।६३।। कनखल में गंगा की महिमा। कुरुक्षेत्र में सरसुति महिमा।।६४।। पर नर्मदा ग्राम जंगल में। नित रहती माता मंगल में।।६५।। जटा शंकरी नाम तुम्हारा। तुमने कोटि दुखीयों को तारा।।६६।। जल प्रताप तुममें अति माता। जो रमणीय तथा सुखदाता।।६७।। चाल सर्पिणी

सम है तुम्हारी। महिमा अति अपार है तुम्हारी।।६८।। तुम में पडी अस्थि भी भारी। छुवत पाषाण होत वर वारी।।६९।। युमुना में जो मुनज नहाता। सात दिनों में वह फल पाता।।७०।। सुरसुति तीन दिनों में देतीं। गंगा तुरत बाद ही देतीं।।७१।। जडी बूटियां तट पर राजें। मोहक दृश्य सदा ही साजें।।७२।। वायु सुगंधित चलती तीरा। जो हरती नर तन की पीरा।।७३।। हो प्रसन्न ऊपर मम माता। तुम ही मातु मोक्ष की दाता।।७४।। जो मानव यह नित है पढ़ता। उसका मान सदा ही बढ़ता।।७५।। अगणित बार पढ़ै जो कोई। पूरण कामना त्वरीत होई।।७६।। सबके उर में बसत नर्मदा। यहां वहां सर्वत्र नर्मदा।।७७।। सुरज की पुत्री सुंदर होवे यमुना। यम शनि की भगीनी सब कहे जमुना।।७८।। गंगा जमुना का संगम होवे इस जहान। स्वर्ग समान वाराणसी में प्रयाग होवे महान।।७९।। नर्मदा का महात्म्य स्वामी साई ने बताया। सुनके जीवन त्वरीत पावन कराया।।८०।। पर रेवा का मनोहर दर्शन करके। सुख का फल पाता खाली झोली भरके।।८१।। स्वामी साई ने अनेको नदियों की कथा सुनाई। सुनाके भगत को आनंद दिलाई।।८२।। स्वामी साई ध्यान में डुबकी लगावे। भगत के सातो जन्म के पाप बुझावे।।८३।। प्राशन से महारोग बुझावे। ध्यान मात्र से अमिरस पिलावे।।८४।। एक अनोखेने श्री साई का गुण गान गाया। मन मे धरे वांछीत फल पाया।।८५।। कहकर महिमा त्रिमुर्ती साई सुखाया। इस भक्त के जीवन को पार लगाया।।८६।। स्वामी साईने विश्वकर्मा का रुप बाटा। सदा भजत रहने से दु:ख को काटा।।८७।। विश्वकर्मा तव नाम अनूपा। पावन सुखद मनन अनरुपा ।।८८।। सुंदर सुयश भुवन दशचारी। नित प्रीती गावत गुण नर नारी।।८९।। नित नित गुण गावत तेरे। धन्य - धन्य विश्वकर्मा

मेरे।।९०।। आदि सृष्टि महं तू अविनाशी। मोक्ष धाम तजि अयो सुपासी।।९१।। तुम आदि विश्वकर्मा कहलायो। चौदह विद्या भू पर फैलायो।।९२।। लोह काष्ठ अरु ताम्र सुवर्णा। शिला शिल्प जो पंचक वर्णा।।९३।। दे शिक्षा दु:ख दारिद्र नाश्यो। सुख समृध्दि जगमहं परकाश्यो।।९४।। जगत गुरु इस हेतु भये तुम। तम - अज्ञान - समुह हने तुम।।९५।। सुष्टि करन हित नाम तुम्हारा। ब्रह्मा विश्वकर्मा भय धारा।।९६।। विष्णु अलैकिक जगरक्षक सम। शिवकल्याणदायक अति अनुपम।।९७।।नमो नमो विश्वकर्मा देवा। सेवत सुलभ मनोरथ देवा।।९८।। अपनी कलासे सृष्टी को सजाये। स्वर्ग लोक जैसे दृष्य बनाये।।९९।। बुद्धी से दियो ग्राम मंदीर को आकार। सुकुन देने हेतु करे साकार।।१००।। अविचल भक्ति हृदय बस जाके। चार पदास्थ करतल जाके।।१०१।। सेवत तोहि भुवन दश चारी। पावन चरण भवोभव कारी।।१०२।। लौकिक किर्ती कला भंडारा। दाता त्रिभुवन यश विस्तारा।।१०३।। भुवन पुत्र विश्वकर्मा तनुधरि। वेद अथर्वण तत्व मनन करि।।१०४।। सत्य भजन तुम्हारो जो गावै। सो निश्चय चारों फल पावै।।१०५।। स्वामी साई की लिला बडी मन भावन। सुनके रोगोंका करावे मूल धावन।।१०६।। भिषगराज रुप में निर्दोश साई को देखा। भक्त की ओर तुरंत स्वास्थ को फेका।।१०७।। जरा व्याधि को नाश करे करावे। भगत की झोली स्वास्थ से भरे भरावे।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय ११ विद्या लक्ष्मी वर्धक माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरुपा। निर्गुण ब्रम्ह अखण्ड अनूपा।।६।।अथर्ववेद अरु शिल्प शास्त्र का। धनुर्वेद सब कृत्य आपका।।७।। जब जब विपती पड़ी देवन पर। कष्ट हन्यो प्रभु कला सेवन कर।।८।। विष्णु चक्र अरु ब्रम्ह कमंडल। रुद्र शूल सब रच्यो भूमंडल।।९।। इंद्र धनुष अरु धनुष पिनाका। पुष्पक यान अलौकिक चाका ।।१०।। वायुयान मय उडन खटोले। विद्युत कला तंत्र सब खोले।।११।। सुर्य चंद्र नवग्रह दिग्पाला। लोक लोकांतर व्योम पताला।।१२।। अग्नि वायु क्षिति जल आकाशा। अविष्कार सकल परकाशा।।१३।। जल का महत्त्व विष्णुकर्माने समझाया। उसी हेतु कुप तालाब नदी को बनाया।।१४।। मनु मय त्वष्टा शिल्पी महाना। देवागम मुनि पंथ सुजाना।।१५।। लोक काष्ठ शिला ताम्र सुकर्मा। स्वर्णकार मय पंचक धर्मा।।१६।। शिव दधीचि हरिश्चन्द्र भुआरा। कृत युग शिक्षा पलिऊ सारा।।१७।। परशुराम, नल, नील, सुचेता। रावण राम शिष्य सब त्रेता।।१८।। वर्णातीत अकथ गुण सारा। नमो नमो भय तारन हारा।।१९।। नानारुप शिल्प मन को भावक। ग्राम बृह मंदिर सुंदर और मोहक।।२०।। ऐसे विश्वकर्मा रुप में स्वामी गुरु को पाया। स्वामी तुने ही वास्तु विज्ञान सिखाया।।२१।। स्वामी साई करावे

गरीबों को भोजन। पेट भराके दुख का होवे परिमार्जन।।२२।। शंकातूर करता रहे सदा विचारा। स्वामी साई ने इस मुढ़ी को तारा।।२३।। जाओ मुंबादेवी ऐसे स्वामीने फरमाया। प्रचुर धन देके भगत का जीवन सुखाया।।२४।। स्वामी साईको धर्म रुप में पाया। विचार करनेसेही मोक्ष द्वार दिखाया।।२५।। जय ब्रह्मा जय स्वयंभु चतुरानन सुखमुल। करहु कृपा निज दास पै रहहु अनुकूल ।।२६।। तुम सृजक ब्रह्मांड के अज विधि धाता नाम। विश्वाविधाता कीजित जन पै कृपा ललाम।।२७।। जय जय कमलासन जगमूला। रहहु सदा जनपै अनुकूला।।२८।। रक्तवर्ण तव सुभग शरीरा। मस्तक जटाजूट गंभीरा।।२९।। ताके ऊपर मुकूट बिराजै। दाढ़ी श्वेत महाछवि छाजै।।३०।। श्वेतवस्त्र धारे तुम सुंदर। है यज्ञोपवीत अति मनहर।।३१।। कानन कुंडल सुभग बिराजहिं। गल मोतिन की माला राजहिं।।३२।। चारिहु वेद तुम्हीं प्रगटाए। दिव्य ज्ञान त्रिभुवनहिं सिखाए।।३३।। ब्रह्मलोक शुभ धाम तुम्हारा। अखिल भुवन महं यश बिस्तारा।।३४।। सरस्वती तब सुता मनोहर। वीणा वादिनी सब विधि सुंदर।।३५।। कमलासन पर रहे बिराजे। तुम हरि भक्ति साज सब साजे।।३६।। क्षीर सिंधु सोवत सुरभूपा। नाभि कमल भो प्रगट अनुपा।।३७।। तेहि पर तुम आसीन कृपाला। सदा करहु संतन प्रतिपाला।।३८।। सकल सृष्टि कर स्वामी जोई। ब्रम्ह अनादि अलख है सोई।।३९।। निज इच्छा उन सब निरमाए। ब्रम्ह्मा विष्णु महेश बनाए।।४०।। महापद्म जो तुम्हारो आसन। ता पै अहै विष्णु को शासन।।४१।। विष्णु नभितें प्रगटयो आई। तुम कहं सत्य दीन्ह समुझाई।।४२।। ब्रम्ह करे तुम जगत को उत्पन्न। माया को सवारे करे सृष्टी को सम्पन्न।।४३।। कमल नाल धरि नीचे आवा। तहां विष्णु के दर्शन

पावा।।४४।। शयन करत देखे सुरभूपा। श्यामवर्ण तनु परम अनूपा।।४५।। गल बैजन्ती माल बिराजै। कोटि सूर्य की शोभा लाजै।।४६।। शंख चक्र अरु गदा मनोहर। पद्म सहित आयुध सब सुंदर।।४७।। पायं पलोरति रमा निरंतर। शेषनाग शय्या अति मनहर।।४८।। ब्रम्ह तुमरि लिला बहुत सुंदर। मिट्टी को देके जीवन तुही मनोहर।।४९।। तीजे श्री शिवशंकर आहीं। ब्रम्हरुप सब त्रिभुवन माहीं।।५०।। शिव संहार करहिं सब केरा। हम तीनहुं कहं काज धनेरा।।५१।। यह सुनि ब्रम्हा परम सिहाए। परब्रम्ह के यश अति गाए।।५२।। नाम पितामह सुंदर पायेऊ। जड चेतन सब कहे निरमायेऊ।।५३।। लीन्ह अनेक बार अवतारा। सुंदर सुयश जगत विस्तारा।।५४।। जो कोऊ ध्यान धरै नर नारी। ताकि आस पुजावहु सारी।।५५।। पुष्कर तीर्थं परम सुखदाई। तहं तुम बसहु सदा सुरसाई।।५६।। कुंड नहाई करहि जो पूजन। ता कर दूर होई सब दूषण।।५७।। मारुती बनके जीवन सुधारा। मालीक होके इस ललन को सवारा।।५८।। स्वामी साई देवे ब्रह्म का ज्ञान। खोले किवाड दूर करे अज्ञान।।५९।। निरंजन तुही साई दिखावे सुरज का ज्ञान। उजाला देके दुर करे तमरुपी अज्ञान।।६०।। सत्य सत्य सत्य व्रत स्वामी। सत्य सनातन अन्तर्यामी।।६१।। समर्थ स्वामी होवे जग पालक। सुरज रुप में तुम्हे देखे ये भावक।।६२।। जय सविता जय जयति दिवाकर। सहस्त्रांशु! सप्ताश्व तिमिरहर।।६३।। भानु, पतंग, मरीचि, भास्कर। सविता, हंस सुनूर विभाकर।।६४।। विवस्वान, आदित्य, विकर्तन। मार्तण्ड हरिरूप विरोचन।।६५।। अम्बरमणि खग रवि कहलाते। वेद हिरण्यगर्भ कह गाते।।६६।। हे सुजर तुम अगण तपण का गोला। प्राणो को सुधारे रुप तुम्हारा भोला।।६७।। अरुण सदृश सारथी मनोहर। हांकत हय साता

चढ़ि रथ पर।।६८।। मंडल की महिमा अति न्यारी। तेज रुप केरी बलिहारी।।६९।। नमस्कार को चमत्कार यह। विधि हरिहर को कृपासार यह।।७०।। सेवै भानु तुमहिं मन लाई। अष्टसिध्दि नवनिधि तेहिं पाई।।७१।। बारह नाम उच्चारन करते। सहस जनम के पातक टरते।।७२।। रवि किरण फैलावे छत्र की छाया। स्वामी साईका वर दुर करे अघोरी माया।।७३।। जैसे स्वामी साई करे जीवन में चमत्कार। वैसे सुरज नाश करे तमोरुपी बुखार।।७४।। अर्क शीर को रक्षा करते। रवि ललाट पर नित्य बिहरते।।७५।। सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत। कर्ण देस पर दिनकर छाजत।।७६।। भानु नासिका वास करहु नित। भास्कर करत सदा मुख कौ हित।।७७।। ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे। रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे।।७८।। कंठ सुवर्ण रेत की शोभा। तिग्मतेजसः कांधे लोभा।।७९।। पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर। त्वष्टा - वरुण रहम सउष्णकर।।८०।। युगल हाथ पर रक्षा कारन। भानुमान उससर्म सुउदरचन।।८१।। बसत नाभि आदित्य मनोहर। कटि महं हंस, रहत मन मुदभर।।८२।। जंघा गोपति, सविता बासा। गुप्त दिवाकर करत हुलासा।।८३।। विवस्वान पद की रखवारी। बाहर बसते नित तम हारी।।८४।। सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै। रक्ष कवच विचित्र विचारै।।८५।। स्वामी साई फुके गीता, मोदन करे। जैसे भानु उर्जा, हृदय मंदीरपे सवारे।।८६।। दरिद्र कुष्ठ तेहिं कबहुं न व्यापै। जोजन याको मनमहं जापै।।८७।। स्वामी साई के चक्र ने दुःख को चकराया। बुरी चीत को दिव्य नजर से बुझाया।।८८।। स्वामी साई की गदा ने शत्रु को फटकाया। मुर्छीत करने हेतु स्वामीसाई ने शंख बजाया।।८९।। स्वामी साई के चक्र ने दारीद्रय को चकराया। ऋण चिंता को दिव्य नजर से बुझाया।।९०।। धन्य - धन्य तुम दिनमनि देवा।

किया करत सुरमुनि नर सेवा।।९१।। भक्ति भावयुत पूर्ण नियमसों। दूर हरतसो भवके भ्रमसों।।९२।। परम धन्य सो नर तनधारी। हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी।।९३।। अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन। मध वेदांगनाम रवि उदयन।।९४।। भानु उदय वैसाख गिनावै। ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै।।९५।। यम भादौं आश्विन हिमरेता। कार्तिक होत दिवाकर नेता।।९६।। स्वामी साईको देखा ऐसे रविरुपमें। जो जिंदा रखे मातृ - पितृ भावमें।।९७।। जैसे नदी संभाले सारे मांजी। भगत को संभाले जो स्वामी साई को पूजी।।९८।।स्वामी साईके शरण में जो भक्ति से आवे। शनि देव की दृष्टी न कभी सतावे।।९९।। जयति जयति शनिदेव दयाला। करत सदा भक्तन प्रतिपाला।।१००।। चारि भुजा ,तनु श्याम विराजै। माथे रतन मुकुट छवि छाजै।।१०१।। परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।।१०२।। स्वामी साई तु ही तो है धर्म का मालिक। अधर्म को नाशके बने सत्य का मालिक।।१०३।। कोटी कोटी ब्रह्मांड तुम्हारे चरणो में होवे। धर्म का ज्ञान देके आनंद से झुलावे।।१०४।। स्वामी साई को सप्तर्शी रुप में पाया। सारे विश्व को आनंद दिलाया।।१०५।। महं के उपर सात लोक कहे परलोग। निचें झाके तो रहें सात पाताल लोक।।१०६।। स्वामी साई वास करते है त्रिलोक। नरक से उठाके पहुंचावे स्वर्ग लोक।।१०७।। स्वामी साई का नाम लेत जो कोई। विद्यासमृद्धी रुप मनकामना पूर्ण होई।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय १२ अघोरीविद्या नाशक शापमोचक माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। स्वामी साई ने सात ग्रहों को धारा। कृपा आर्शीवाद से सारे भगत को तारा।।६।। सूरज के रुप में स्वामी साई को पाया। अघोरी को मारे तेरी ही माया।।७।। सोम होवे शीतल हिम का सागर। भोले के सीर पे सोवे मखमली क्षीरसागर।।८।। स्वामी साई को सोम रुप में पाया। चंचल मन को स्थिर कराया।।९।। मंगल का रुप स्वामी साईने पाया। रुद्र क्रोधी को शांत कराया।।१०।। कोमल बुध को निर्मल साई रुप में धारा। बुद्धी के रुप में विश्वज्ञान को टारा।।११।। विशाल गुरु को त्रिगुणी साई के रुप में पाया। अनंत विश्व का ज्ञान उसमें समाया।।१२।। अज्ञान मुढी इस भगत को सुधारे। माया सागर में जीवन उझारे।।१३।। प्यार का सागर रहे शुक्र की माया। गोता खाके इस भगत को पार कराया।।१४।। शुक्र जैसे प्यार कला का सागर। स्वामी साई ने दिखाया सुंदर क्षीरसागर।।१५।। स्वामी साई को भगत ने शनि रुप में पाया। नही दुंगा दुख भगत को समझाया।।१६।। कुण्डल श्रवण चमाचम चमके। हिये माल मुक्तन मणि दमके।।१७।। स्वामी साई का आर्शिवाद करे भक्त को भावन। शनि महाराज का वर चमकाये नवजीवन।।१८।। कर में गदा त्रिशूल कुठारा। पल बिच करैं अरिहिं संहारा।।१९।। पिंगल कृष्ण

अरु छायानन्दन। यम कोणस्थ रौद्र दुख भंजन।।२०।। सौरी मंद शनी दश नामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा।।२१।। जा पर प्रभु प्रसन्न ह्वै जाहीं। रंकहुं राव करैं क्षण माहीं।।२२।। पर्वतहू तृण होइ निहारत। तृणहू को पर्वत करि डारत।।२३।। राज मिलत बन रामहिं दीन्हो। कैकेई की मति सब हरि लीन्हो।।२४।। बनहूं में मृग कपट दिखाई। मातु जानकी गई चुराई।।२५।। लखनहिं शक्ति विकल करि डारा। मचि गा दल में हाहाकारा।।२६।। रावण की गति मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई।।२७।। दियो कीट करि कंचन लंका। बजि बजरंग बीर की डंका।।२८।। नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा। चित्र मयूर निगलि गै हारा।।२९।। भारी दशा निकृष्ट दिखायो। तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो।।३०।। हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी। आपहु भरे डोम घर पानी।।३१।। श्री संकरहिं गह्यो जब जाई। पारवती को सती कराई।।३२।। तनिक विलोकत ही करि रीसा। नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।।३३।। पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी। बची द्रौपदी होति उघारी।।३४।। कौरव के भी गति मति मारयो। युध्द महाभारत करि डारयो।।३५।। रवि कहं मुख महं धरि तत्काला। लेकर कूदि परयो पाताला।।३६।। शेष देव लखि विनती लाई। रवि को मुख ते दियो छुड़ाई।।३७।। वाहन प्रभु के सात सुजाना। ह्य दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना।।३८।। जम्बुक सिंह आदि नग धारी। सो फल ज्योतिष कहत पुकारी।।३९।। गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं। हय ते सुख सम्पति उपजावैं।।४०।। जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै। मृग दे कष्ट प्राण संहारै।।४१।। जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी। चोरी आदि होय डर भारी।।४२।। तैसहि चारि चरण यह नामा। स्वर्ण लौह चांदी अरु तामा।।४३।। लौह चरण पर जब प्रभु आवैं। धन जन सम्पति नष्ट करावैं।।४४।।

समता ताम्र रजत शुभकारी। स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी।।४५।। जो यह शनी चरित नित गावै। कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै।।४६।। अद्‌भुत नाथ दिखावैं लीला। करैं शत्रु के नशि बलि ढीला।।४७।। पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत। दीप दान दै बहु सुख पावत।।४८।। ऐसी महिमा तुम्हारी हो अपरंपार। स्वामी साईके भगत पे सदा होवे कृपार।।४९।। जगद को सुखावे करके लिलार। शनि महाराज की कृपा से होवे पैल पार।।५०।। शनि देव मैं सुमिरौं तोही। विद्या बुध्दि ज्ञान दो मोही।।५१।। तुम्हरो नाम अनेक बखानौं। क्षुद्रबुध्दि मैं जो कुछ जानौं।।५२।। पिंगल मंदसौरि सुख दाता। हित अनहित सब जब के ज्ञाता।।५३।। नित जपै जो ना तुम्हारा। करहु व्याधि दुख से निस्तारा।।५४।। राशि विषमवस असुरन सुर नर। पन्नग शेष सहित विद्याधर।।५५।। कानन किला शिबिर सेनाकर। नाश करत सब ग्राम्य नगर भर।।५६।। डालत विघ्न सबहि के सुख में। व्याकुल होहिं पड़े सब दुख में।।५७।। नाथ विनय तुमसे यह मेरी। करिये मोपर दया घनेरी।।५८।। जो गुड़ उड़द दे वार शनीचर। तिल जव लोह अन्न धन बिस्तर।।५९।। दान दिए से होंय सुखारी। सोइ शनि सुन यह विनय हमारी।।६०।। नाथ दया तुम मोपर कीजै। कोटिक विघ्न क्षणिक महं छीजै।।६१।। वंदत नाथ जुगल कर जोरी। सुनहु दया कर विनती मोरी।।६२।। कबहुंक तीरथ राजा प्रयागा। सरयू तोर सहित अनुरागा।।६३।। ध्यान धरत हैं जो जोगी जनि। ताहि ध्यान महं सूक्ष्म होहि शनि।।६४।। रहैं सुखी शनि देव दुहाई। रक्षा रवि सुत रखैं बनाई।।६५।। ब्रम्हा जगत बनावत हारा। विष्णु सबहिं नित देत अहारा।।६६।। हैं त्रिशूलधारी त्रिपुरारी। विभू देव मूरति एक वारी।।६७।। इकहोइ धारण करत शनि नित। वंदन सोई शनि को दमनचित।।६८।। जो

नर पाठ करै मन चित से। सो नर छूटै व्यथा अमित से।।६९।। शनैः शनैः चलते है शनि महाराज। भजन करनेसे मिटावे समस्त पापी रास।।७०।। दृष्टी रोके स्वामी साईके चरणोंपर। सुख देवे भगत को मित मिलावे आपार।।७१।। हौं सुपुत्र धन संतति बाढ़े। कलि काल कर जोड़े ठाढ़े।।७२।। पावै मुक्ति अमर पद भाई। जो नित नव ग्रह सम ध्यान लगाई।।७३।। पढै प्रात जो नाम शनि दस। रहैं शनीश्चर नित उसके बस।।७४।। पीडा शनि की कबहुं न होई। नित उठ ध्यान धरे जो कोई।।७५।। निशिदिन ध्यान धरै मनमाहीं। आधि - व्याधि ढिंग आवै नाहीं।।७६।। पुजन करे गुरु का ध्यान धरके कोई। सदाही रक्षा करे भगतकी सद्गुरु श्री स्वामी साई।।७७।। स्वामी साई को राहु रुप में दिखाया। चंद्र रवी के मर्दन से तुही सुखाया।।७८।। जय जय राहु गगन प्रविसइया। तुमही चन्द्र आदित्य ग्रसइया।।७९।। रवि शशि अरि स्वर्भानु धारा। शिखी आदि बहु नाम तुम्हारा।।८०।। सैहिंकेय तुम निशाचर राजा। अर्धकाय जग राखहु लाजा।।८१।। यदि ग्रह समय पाय कहिं आवहु। सदा शान्ति और सुख उपजावहु।।८२।। मर्यादा पुरुषोत्तम साई को केतु रुप में पाया। रुद्र रुप पलाश पुष्प सम तेरी है काया।।८३।। जय श्री केतु कठिन दुखहारी। करहु सुजन हित मंगलकारी।।८४।। ध्वजयुत रुण्ड रूप विकराला। घोर रौद्रतन अघमन काला।।८५।। शिखी तारिका ग्रह बलवाना। महा प्रताप न तेज ठिकाना।।८६।। वाहन मीन महा शुभकारी। दीजै शान्ति दया उर धारी।।८७।। नाथ विनय तुमसे यह मेरी। करिये मो पर दया घनेरी।।८८।। जो नर पाठ करे मन चित से। सो नर छुटै व्यथा अमित से।।८९।। जय जय रवि शशि सोम बुध, जय गुरु भृगु शनि राज। जयति राहु अरु केतु ग्रह, करहु अनुग्रह आज।।९०।। पीड़ा नव ग्रहों की कबहुं न

होई। नित उठ ध्यान धरै जो कोई।।९१।। जो यह पाठ करे नव ग्रह रूप स्वामी साईशा। होय सुख साखी जगदीशा।।९२।। माय बाप स्वामी साई सदा देवे साथ। नवग्रहों के रूपो में भजे तुम्हे आज।।९३।। स्मरण करके स्वामी साई को दिपक जलावे। होवे प्रसन्न नवग्रह समस्त कष्ट मिटावे।।९४।। गेहु चावल मसुर मुग तथा चना। चावल उडद तील दान है सबका माना।।९५।। दृष्टी रोके स्वामी साई के चरणोंपर। माय माऊली हाथ रखे सदा ही माथे पर।।९६।। जो नाम नव ग्रहों के खास। रहे नवग्रह नित उसके पास।।९७।। अंतराल मे साहे सत्ताईस किवार। कहे नक्षत्र बनावे भाग्य दिवार।।९८।। उनके पूत्र पौत्र रहे है भारी। कहे योग करण जीवन की करे सवारी।।९९।। स्वामी साई करे प्रेम की बारीष। फुलावे जीवन रुपी कमल होवे जगदिश।।१००।। जय जय स्वामी जय जय जगदाधारा। नव ग्रहों के रुप में इस धरती को तारा।।१०१।। मोहक बासरी कन्हैया बजावे। स्वामी साई का गान मगन में गावे।।१०२।। यह भक्ति का गीत जो कोई पढे पढावै। नजर अघोरी भगत के समिप न आवै।।१०३।। जादु टोना परयंत्र तंत्र मंत्र विद्या। स्वामी साई नाश करावै सब कुविद्या।।१०४।। शाप दु:ख अघोरी समिप न आवै। जो स्वामी साई का गान लगन से गावै।।१०५।। नवग्रहो जैसे नव सिध्दी के रखपाल। स्वामी साई के कृपासे सदा रहे कृपापाल।।१०६।। ब्रम्हांड को पाले नौग्रह बलकारी। स्वामी साईका वर पिंड को करे हितकारी।।१०७।। दिगंबरा दिगंबरा स्वामी साई दिगंबरा। भगत तारने हेतु तुही दिव्य अवतारा।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय १३ कुलदोषनाशक माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। स्वामी साई मन में सदा गुण गावै। सारे भगत को सुख सम्पत्ती दिलावै।।६।। प्रथमहि रवि कहं नावों माथा। करहु कृपा जनि जानि अनाथा।।७।। हे आदित्य दिवाकर भानू। मैं अति मन्द महा अज्ञानू।।८।। अब निज जन कहं हरहु कलेषा। दिनकर द्वादश रूप दिनेशा।।९।। नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर। अर्क मित्र अघ मोघ क्षमाकर।।१०।। शशि मयंक रजनीपति स्वामी। चन्द्र कलानिधि नमो नमामी।।११।। राकापति हिमांशु राकेशा। प्रणवत जन तन हरहु कलेशा।।१२।। सोम इन्दु विधु शान्ति सुधाकर। शीत रश्मि औषधि निशाकर।।१३।। तुम्हीं शोभित सुन्दर भाल महेशा। शरण शरण जन हरहु कलेशा।।१४।। जय जय जय मंगल सुखदाता। लोहित भौमादिक विख्याता।।१५।। अंगारक कुज रुज ऋणहारी। करहु दया यही विनय हमारी।।१६।। हे महिसुत छितिसुत सुखराशी। लोहितांग जय जन अघनाशी।।१७।। अगम अमंगल अब हर लीजै। सकल मनोरथ पूरण कीजै।।१८।। जय शशि नन्दन बुध महाराजा। करहु सकल जन कहं शुभ काजा।।१९।। दीजै बुध्दिबल सुमति सुजाना। कठिन कष्टहरि करि कल्याना।।२०।। हे तारासुत रोहिणी नन्दन। चन्द्रसुवन दुख द्वन्द्व निकन्दन।।२१।। पूजहु आस दास कहुं

स्वामी। प्रणत पाल प्रभु नमो नमामी।।२२।। जयति जयति जय श्री गुरुदेवा। करों सदा तुम्हारी प्रभु सेवा।।२३।। देवाचार्य तुम देव गुरु ज्ञानी। इन्द्र पुरोहित विद्यादानी।।२४।। वाचस्पती बागीश उदारा। जीव बृहस्पति नाम तुम्हारा।।२५।। विद्या सिंधु अंगिरा नामा। करहु सकल विधि पूरण कामा।।२६।। शुक्र देव पद तल जल जाता। दास निरन्तर ध्यान लगाता।।२७।। हे उशना भार्गव भृगु नन्दन। दैत्य पुरोहित दुष्ट निकन्दन।।२८।। भृगुकुल भूषण दूषण हारी। हरहु नेष्ट ग्रह करहु सुखारी।।२९।। तुहि द्विजवर जोशी सिरताजा। नर शरीर के तुमहीं राजा।।३०।। जय श्री शनिदेव रवि नन्दन। जय कृष्णो सौरी जगवन्दन।।३१।। पिंगल मन्द रौद्र यम नामा। कृष्ण आदि कोणस्थ ललामा।।३२।। वक्र दृष्टि पिप्पल तन साजा। क्षण महं करत रंक क्षण राजा।।३३।। ललत स्वर्ण पद करत निहाला। हरहु विपती छाया के लाला।।३४।। राहु दान मंत्री अर्धकाय सदा क्रोधी नामा। ग्रहराज सुधा पायी पुरण करे मेरे कामा।।३५।। केतु धुम्र केतु काल कलयीतो नाना। लोक केतु महा केतु सदा सुखी करे जाना।।३६।। नवग्रहों के नाम पढे पढावै। संकट विकट अघोरी पास न आवै।।३७।। जो नित पाठ करै चित लावै। सब सुख भोगि परम पद पावै।।३८।। शांति समयी यह पाठ करावै। दुःख पाप शाप निकट न आवै।।३९।। स्वामी साई निरंजन होके हवन करावे। सातों जन्मो के पाप शाप दूर भगावे।।४०।। नक्षत्र योग तिथी करण और मुहुर्त शुची कराते। सहारा देके भगत का जीवन फुलाते।।४१।। श्री स्वामी साई को कुलदेव कुलस्वामीनी के रुप मे पाया। स्मरण करने से भक्तों के दुख को मिटाया।।४२।। जय शिव दुलारा गौरा का प्यारा। विघ्न को हारा माया में सहारा।।४३।। जय जय जय गणों का अधिपती। मारे दुख को

सुख का होवे पती।।४४।। बुद्धी का दाता सदा रहे संकट का त्राता। दूर करे माया समृद्धी का धाता।।४५।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी विद्या की दाता।।४६।। धारण करे कुल को देके सहारा। सुख देके इस ललन को संवारा।।४७।। निधी का दाता दारिद्रय ऋण को दूर भगाता। सुकून देके शाप से मुक्त कराता।।४८।। तुम अनाथ के नाथ सहाई। दीनन के तुम हो सदा सहाई।।४९।। नाम अनेकन मात तुम्हारे। भक्त जनों के संकट टारे।।५०।। निशिदिन ध्यान धरे जो कोई। ता सम धन्य और नही कोई।।५१।। जो तुम्हारे नित पांव पलोटत। आठो सिद्धी ताके चरणा में लोटत।।५२।। सिद्धी तुम्हारी सब मंगलकारी। जो तुम पे जावे बलिहारी।।५३।। जय जय जय कुलदेव कुलोद्धारी। सदा इस नन्दन को करे सुखकारी।।५४।। जय जय जय अनंत अविनाशी। कृपा करो तुम पुत्र के घटवासी।।५५।। जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरुपा। निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनुपा।।५६।। जय जय जय कुलस्वामिनी कुलपालन कारी। सदा दु:खहारी करत कृपा सबसे भारी।।५७।। जय जय जय माता कुलजननी। कुलधात्री माहेश्वरी तुही भवानी।।५८।। जय जय जय सत्व प्रकाशी तमो नाशी। जैसे सूरज धरती को प्रकाशी।।५९।। चारिक वेद प्रभु के साखी। तुम भक्तन की लज्जा राखी।।६०।। तुम्हारी महिमा वुध्दी बढाई। शेष सहस्त्र मुख सके न गाई।।६१।। मैं मतिहीन मलीन दुखारी। करहु कौन विधि विनय तुम्हारी।।६२।। अब प्रभु दया दीन पर कीजै। अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै।।६३।। कलुआ भैरों संग तुम्हारे। अरीहित रुप भयानक धारे।।६४।। आशीर्वाद तुम्हारा बहुत ही हितकारी। चौसठ जोगन रहे आज्ञाकारी।।६५।। प्रेम सहित जो कीर्ति गावई। भव बंधन सो मुक्ति पावई।।६६।। कुलदेव

कुलस्वामिनी की महिमा जो कोई पढे पढावै। ध्यान लगाकर सुने सुनावै।।६७।। कुलधात्री सदा सकल सुख को भावै। इस भक्त के भाग्य को खुद लिखावै।।६८।। दया दृष्टी हेरो कुलदेव जगदंबा। केही कारण माता पिता कियो विलंबा।।६९।। करहु धारण कर्ता तुम रखवाली। जयती जयती पालन कर्ता तुम सब को पाली।।७०।। सेवक दीन अनाथ अनारी। भक्ति भाव युती शरण तुम्हारी।।७१।। माय बापा ने दिया पुत्र को वरदान। दीन दुखारु भगत को करेंगे धनवान।।७२।। शिव मार्ताण्ड मल्हारी नाम तुम्हारा। इस भक्त को तेरा ही सहारा।।७३।। भवानी जगदंबा रामवरदायिनी नाम तुम्हारा। तीन काल में तेरा ही सहारा।।७४।। रक्षा करे भक्त की त्रिकाल। दूर भगादे दु:ख का अकाला।।७५।। जो होई पीडा जादू टोणादि जहाल। नाश कर उसे कुलाधारी ऐसी करे धमाल।।७६।। प्रतिपदा चतुर्थी नवमी पौर्णिमा। सदा अमावस को पाठ करके देखे करिष्मा।।७७।। सदा ही कुलधारी रहे भगत के पीछे। रक्षा करके मेरी फल दे अच्छे से अच्छे।।७८।। सत्य भजन जो तेरे गावे। सो निश्चय चारों फल पावें।।७९।। स्वामी साई को गो माता के रुप में संवारा। दीन भगत पे करे सुख का फवारा।।८०।। युगंधरा सुरुपा बहुरुपा विश्वरुपा रुपा में मंडीत। ज्ञान की सीख देके करावे पंडीत।।८१।। पुरब में गो माता दख्खन में गो माता। पश्चिम में गो माता उत्तर में जय गो माता।।८२।। इशान में गो माता अगन में गो माता। नैऋत में गो माता वायुकोन में जय गोमाता।।८३।। उपर गो माता निचे गोमाता। सभी दिशा में पूजु जय हो गो माता।।८४।। तैतीस कोट भगवान उदर में करे वासा। गोमुत्र गो मय में माई लक्ष्मी का सहवासा।।८५।। सदा सुख देवे काम धेनू की माया। स्वामी साई की रहे दीन भगत पे छाया।।८६।। गो माता संग बाल गोपाल

दुलारा। गोप गोपीयों को भावे यशोदा का प्यारा।।८७।। सद सद स्वामी सद सद साई। सद सद गोपाला सद सद कृष्णामाई।।८८।। स्वामी साई ने एकादश रुद्र रुप धारा। जीवन के गम को देवे झट से फटकारा।।८९।। जीवन रुपी सागर में कमल रुप धारा। सदा ही सुख समृद्धी को देवे थारा।।९०।। अष्ट वसु के रुप में स्वामी साई को पहचाना। ज्ञान और बुद्धी को साथ लेवे यह विवेक जाना।।९१।। जैसे ज्योत का प्रकाश अंध:कार को मिटावे। वैसे ज्ञान का तेज अज्ञान को मिटावे।।९२।। सारे धरत्री को आठ वसु सब दिशा से सवारे। वैसे भगत का जीवन स्वामी साई तुही सुधारे।।९३।। जय जय कुलदेव जय जय कुलस्वामिनी। जय जय स्वामी साई भगत का भाग्य लिखानी।।९४।। जय जय ग्राम देव जय जय स्थान देव। भगत के भाग्य को सवारे नृसिंह साईदेव।।९५।। धरती कि गोद में नौरत्नो का रहे भांडार। काश्यप साई वर से जीवन को देवे आकार।।९६।। स्वामी साई को पार्षद गणों के रुप में देखा। दुर्भाग्य शाप को दूर से ही रोका।।९७।। मैं भगत लेके भक्ति की आस। जीवन ज्योती जले सदा तेरे ही पास।।९८।। स्वामी साई होवे जगत के प्रजापती। उपजाके सृष्टी, करे शाप दोष की निवृत्ती।।९९।। जय जय स्वामी साई तुही होवे ॐ कारा। इहलोक परलोक को तुही देवे सहारा।।१००।। जनम मरण से इस जगत को सवारा। अमीरस को पिलाके सत्य का करे फवारा।।१०१।। स्वामी साई ने मरुद्गणों का रुप धारा। दोष दु:ख शाप को दिलावे फटकारा।।१०२।। जय कुलाधारी जय जय कुलपालका। मायासे सुख देवे रक्षावे यह बालका।।१०३।। स्वामी साई गायत्री जिवन झुलावे। भगत को सदा ही कृपा दृष्टी से झुलावे।।१०४।। ॐ द्रां श्री स्वामी साई नम:। शाप दु:ख से दुरावे तुही जगत प्यारा।१०५।।

ॐ श्रीं ह्रीं स्वामी साई नमः। मंत्र जाप से करे लक्ष्मी का फवारा।।१०६।। ॐ क्लिं श्रीं स्वामी साई नमः। कुल दोष शाप को बुझाके भगत को देवे सहारा।।१०७।। स्वामी साई के ज्योत की छबी है न्यारी। कुलदोष शाप को बुझावे यह महिमा भारी।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

अध्याय १४ समृद्धी धनधान्य संवर्धन माला

जय जय जय गणपती गणराजु।मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। पूण्य पूण्य श्री कैलास पर्वतराया। स्वामी साई को महादेव रुप में वहीपाया।।६।। जय जय कैलासा जय जय पर्वत राजा। जय जय हिमालय जय जय विंध्य पर्वता।।७।। जय जय त्रिकुटा जय जय सहय पर्वता। जय जय पारीयात्रा जय जय श्वेत पर्वतराजा।।८।। जय जय निला जय जय भास पर्वता। जय जय कोष्ठवाना जय जय गुरुस्कधा।।९।। जय जय माहेन्द्र जय जय माल्यवान पर्वता। धरत्री माई को संभाले तुम्ही जगत्पीता।।१०।। स्वामी साई होके सुवन बावन वीर। भय को थारा न दे चला के बल का तीर।।११।। भारी कष्टन की करे सफाई। जगतपालक तुही तो गुरु स्वामी माई ।।१२।। ऊंगली उठाके मुर्दे में जान भरे। स्वामी साई वर से खाली घडा भरे।।१३।। गिरीराज रूप में बलाढय स्वामी साई को पाया। दु:ख हराके देवे माँ बाप की छाया।।१४।। ऐसे स्वामी साईको गोवर्धन रुप में पाया। पुजा करनेसे ही फैलावे छत्र की छाया।।१५।। स्वामी साई कृष्ण रुप में गोवर्धन धारा। भगत को नहलावे अमिरस का फवारा।।१६।। जय हो जय बंदित गिरिराजा। ब्रज मंडल के श्री महाराजा।।१७।। विष्णु रूप तुम हो अवतारी। सुंदरता पै जग बलिहरी।।१८।। स्वर्ण शिखर अति शोभा पावें। सुर मुनि गण दरशन को

आवे।।१९।। शांत कंदरा स्वर्ग समाना। जहां तपस्वी धरते ध्याना।।२०।। द्रोणगिरी के तुम युवराजा। भक्तन के साधौ हौ काजा।।२१।। विष्णु धाम गौलोक सुहावन। यमुना गोवर्धन वृंदावन।।२२।। देख देव मन में ललचाए। वास करन बहुत रूप बनाए।।२३।। आनंद ले गोलोक धाम के। परम उपासक स्वामी साई रुप नाम के।।२४।। द्वापर अंत भए अवतारी। कृष्णचंद्र आनंद मुरारी।।२५।। महिमा तुम्हारी कृष्ण बखानी। पूजा करिबे की मन में ठानी।।२६।। ब्रजवासी सबके लिए बुलाई। गोवर्धन सो पूजा करवाई।।२७।। पूजन कूं व्यंजन बनवाए। ब्रजवासी घर घर ते लाए।।२८।। ग्वाल बाल मिलि पूजा कीनी। सहस भुजा तुमने कर लीनी।।२९।। स्वयं प्रकट हो कृष्ण पूजा में। मांग मांग के भोजन पावें।।३०।। देवराज मन में रिसियाए। नष्ट करन ब्रज मेघ बुलाए।।३१।। छाया कर ब्रज लियो बचाई। एकऊ बूंद न नीचे आई।।३२।। सात दिवस भई बरसा भारी। थके मेघ भारी जल धारी।।३३।। कृष्णाचंद्र ने नख पै धारे। नमो नमो ब्रज के रखवारे।।३४।। संग सुरभि ऐरावत लाए। हाथ जोड़कर भेंट गहाए।।३५।। जो यह कथा सुनैं चित लावें। अंत समय सुरपति पद पावै।।३६।। गोवर्धन है नाम तिहारौ। करते भक्तन कौ निस्तारौ।।३७।। जो नर तुम्हरे दर्शन पावै। तिनके दुःख दूर हो जावै।।३८।। कुंडन में जो करें आचमन। धन्य धन्य वह मानव जीवन।।३९।। दूध चढ़ा जो भोग लगावें। आधि - व्याधि तेहि पास न आवें।।४०।। जल फल तुलसी पत्र चढ़ावें। मन वांछित फल निश्चय पावें।।४१।। जो नर देत दूध की धारा। भरौ रहे ताकौ भंडारा।।४२।। पुत्र हीन जो तुम कूं ध्यावें। ताकूं पुत्र प्राप्ति हो जावें।।४३।। रक्षा करे भगत की त्रिकाल। दक्ष रहके सदा बहरावे सुकाल।।४४।। स्वामी

साई ने चौसठी भैरव का रुप धारा। रक्षा करने हेतू अभय को पुकारा।।४५।। चौसठी क्षेत्रपाल तेरे रुप में अवतारे। सुख देके भगत को जीवन तुही सवारे।।४६।। सारे कोतवालों को तेरे रुप में ही पाया। समृद्धी दिलावे दारीद्रय का करे सफाया।।४७।। मृत्यु देवता यम रुप में स्वामी साई को पाया। भगत रक्षा हेतु अभय को दिलाया।।४८।। यम दूतों को गुरु आदेश फर्माया। सदा भगत को मृत्यु से दूर कराया।।४९।। बटुक भैरव रुप है स्वामी साई का विकराला। दुष्टन को जलावे प्रचंड तेरी ज्वाला।।५०।। विकटवीर करुणा के सागर। भक्त कष्ट हर सब गुण आगर।।५१।। भक्त कामना पूरन स्वामी। बजरंगी स्वामी साई के सेवक नामी।।५२।। इच्छा पूरन करने वाले। दु:ख संकट सब हरने वाले।।५३।। जो जिस इच्छा से आते। वे सब मन वाँछित फल पाते।।५४।। रोगी सेवा में जो आते। शीघ्र स्वस्थ होकर घर जाते।।५५।। भूत पिशाच जिन्न वैताला। भागे देखत रुप कराला।।५६।। भौतिक शारीरिक सब पीड़ा। मिटाने शीघ्र करते हैं क्रीड़ा।।५७।। कठिन काज जग में हैं जेते। रटत नाम पूरन सब होते।।५८।। तन मन धन से सेवा करते। उनके सकल कष्ट प्रभु हरते।।५९।। स्वामी साई को यक्षों के रुप में ध्याना। रक्षण करे मेरा मन से ही माना।।६०।। यक्षराज कुबेर रुप में संधारा। सुख संपत्ती देके इस भगत को संवारा।।६१।। जयति शम्भु सुत गौरी नंदन। विन्घ हरन नासन भव फंदन।।६२।। जय गणनायक जनसुखदायक। विश्वविनायक बुध्दिविधायक।।६३।। ऋध्दि सिध्दि सहित जय सुखदाता। संकट हरो हमरी बनके माता।।६४।। जय श्री सकल बुध्दि बलरासी। जय सर्वज्ञ अमर अविनासी।।६५।। जय जय जय वीणाकर धारी। करती सदा सुहंस सवारी।।६६।। रुप सरस्वती माता। सकल विश्व अन्दर

विख्याता।।६७।। जय शिव सखा दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।६८।। विविध रत्न सुवन शोभत काये। कानन कुण्डल मनीमन भाये।।६९।। देवन जबहीं जाय पुकारा। तब ही दुख प्रभु आप निवारा।।७०।। दिशा से राखे आठ दिक्पाल। कुबेर तूही उत्तर के महिपाल।।७१।। तुम्हरी महिमा बुध्दि बढाई। शेष सहस्त्रमुख सके न गाई।।७२।। मैं मतिहीन मलीन दुखारी। करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी।।७३।। निधि का दाता भव शाप त्राता। दारिद्र ऋण को दूर भगाता।।७४।। अब प्रभु दया दीन पर कीजै। अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै ।।७५।। जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी।।७६।। जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरुपा। निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा।।७७।। जय जय जय कुबेर धन संचयकारी। पालन करे जय दु:खहारी ।।७८।। तुम अनाथ के नाथ सहाई। दीनन के हो सदा सहाई।।७९।। ब्रह्मादिक तव पारन पावैं। सदा ईश तुम्हरो यश गावैं।।८०।। आदि अनादि अभय वर दाता। विश्व विदित भव सुख का दाता।।८१।। ध्यान धरे श्रुति शेष सुरेशा। सब ईश्वर लकी तुम्हरी भेषा।।८२।। धनाढ्य नाम है अपरम्पारा। इस भगत को तेरा ही सहारा।।८३।। आशीर्वाद तुम्हारा बहुत ही हितकारी। चौंसठ जोगन रहे आज्ञाकारी।।८४।। जो तुम्हारे नित पाँव पलोटत। आठों सिध्दि ताके चरणा में लोटत।।८५।। सिध्दि तुम्हारी सब मंगलकारी। जो तुम पे जावे बलिहारी।।८६।। जय जय जय कुबेर धनाढ्य श्रीमती। यक्षेन्द्र शिवसखा तू ही निधि पति।।८७।। जय जय जय पद्मधारी पूर्णाय लक्ष्मी सेवक। रत्नधारी विमान सेवी तू ही निति नायक।।८८।। जय जय जय यक्षराज कुलोध्दारी कोषाधिपति। विशारद अश्वारूढ तव कुशाग्रमति।।८९।। जय जय जय वैश्रवण गदाधारी

धनधान्य पाली। दु:खहारी ऋणमोची करो तुम सबकी रखवाली।।९०।। जय जय जय महाप्राज्ञी इलाविदसुत परम संतोषी। पुष्पकधारी संकटमोची तू ही अल्कापुर निवासी।।९१।। लखि प्रेम की महिमा भारी। ऐसे सुंदर कुबेर हितकारी।।९२।। कुबेरजी अंश इस सृष्टी का। सुखी करे भाव उसी दृष्टी का।।९३।। निशि दिन ध्यान धरे जो कोई। ता सम धन्य और नहीं कोई।।९४।। नाम अनेकन यक्ष तुम्हारे। भक्तजनों के संकट तारे।।९५।। प्रेम सहित जो कीर्ती गावई। सदाही सकल धन संपत्ति पावई।।९६।। भूल चूक करे क्षमा हमारी। दर्शन दीजै दशा निहारी।।९७।। चारिक वेद प्रभु के साखी। तुम भक्तन की लज्जा राखी।।९८।। नवमी को पाठ करे जो कोई। तुम भक्तन को अभय वर देई।।९९।। तीन लोक में आप विराजे। सब देवोंसंघ यक्षराज पूजावे।।१००।। स्वामी साई का डंडा हावे महान। भूत प्रेतो को भगाके फुलावे सारा जहान।।१०१।। अघोरी पीडा होवे अक्राल विक्राल। उसे बुझाके चुटकी में लावे सुकाल।।१०२।। बजरंगी होके स्वामी साई करावे जन्नत। सुख ही सुख देके भगत की पुरावे मन्नत।।१०३।। स्वामी साई की लिला होवे अपरंपार। सदा ही दीन भगत को नहलावे बारंबार।।१०४।। स्वामी साई सुवन पालखी सवारे। सारा आसमंत आनंदी आनंद फवारे।।१०५।। गजारुढ संग सेना भारी। बाजत ढोल मृदंग तुतारी।।१०६।। स्वामी साई मन में सदा गुण गावै। सारे भगत को सुख संपत्ती दिलावै।।१०७।। स्वामी साई खोले संपत्ती का भंडारा। दु:खी भगत के जीवन को सदा देवे सहारा।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय १५ संजीवन व्याधीहरण माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। सारे पितरों के रुप में स्वामी साई की करे पूजा। भगत का जीवन सुधारे नही कोई दूजा।।६।। झंझुनु में दरबार है साजे। सब देवो संग आप विराजे।।७।। पित्तर महिमा सबसे न्यारी। जिसका गुण गावे नर नारी।।८।। तीन मंड में आप बिराजे। बसु रुद्र आदित्य में साजे।।९।। भानु उदय संग आप पुजावै। पांच अंजुलि जल रिझावे।।१०।। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई। सब पूजे पित्तर भाई।।११।। बंधु छोड़ ना इनके चरणां। इन्हीं की कृपा से मिले प्रभु शरणा।।१२।। चौदस को जागरण करवाते। अमावस को हम धोक लगाते।।१३।। जाता जडूला सभी मानते। नान्दीमुख श्राध्द सभी करवाते।।१४।। श्री पित्तर जी भक्त हितकारी। सुन लीजे प्रभु अरज हमारी।।१५।। नाम तुम्हारो लेत जो कोई। ता सम धन्य और नहीं कोई।।१६।। जो तुम्हारे नित पांव पलोटत। नवों सिध्दि चरणा में लोटत।।१७।। सत्य भजन तुम्हारो जो गावे। सो निश्चय चारों फल पावे।।१८।। सत्य आस मन में जो होई। मनवांछित फल पावें सोई।।१९।। रिद्धी सिद्धी सहित गणेशजी विराजे। आदिदेव स्वामी साई दाता सबके दुःख बुझावे।।२०।। श्वेतांबरधरा निर्मल तुहि बुध्दि बल राशि। सकल ज्ञानधारी स्वामी साई अमर अविनाशी।।२१।। करत हंस

सवारी स्वामी साई जगन्माता। पूरा ब्रह्मांड तेरे हि अन्दर विख्याता।।२२।। सद्गुरू बनके सुन्दर ज्ञान भरीजे। देके हाथ मोहक ऐसा जीवन करीजे।।२३।। नमन मेरा श्रीकुलदेव कुलस्वामिनी माता। पंचायत अधिष्ठाता श्रीस्वामी सहीत सर्व देवता।।२४।। वंदन मेरा कामधेनु कृपालु गोमाता। उदर में रहे तैतीस कोट देवता।।२५।। नमन मेरा भिषकराज धन्वतरी प्रती। स्वास्थ्य देके बलाढय करीसी।।२६।। क्षीरसागर को मथनी से मथाया। चौदाह रतन में धन्वतरी प्रकटाया।।२७।। लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुराधन्वन्तरिश्चन्द्रमाः। गावः कामदुहा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः।।२८।। अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खामृतं चाम्बुधेः। रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।२९।। ऐते धन्वंतरी प्रगट हुए लेके अमृत घट। खात्मा करके रोगों का करेंगे सुख की लूट।।३०।। जय जय स्वामी साई धन्वंतरी भिषक् राज। दुःखहारक सुखदायक तुहि वैद्यराज।।३१।। जय जय जय विष्णु अवतारी पालनकारी। औषधीदाता वीर्यवान मनःसंताप हारी।।३२।। जय जय जय प्रभु तु ज्योति स्वरुपा। निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा।।३३।। जय जय जय चतुर्भुजा कुलोध्दारी। रोग नाशी पावनकारी अमृत वन धारी।।३४।। जय जय जय विषनाशी शंखचक्र गदा धारी। संकटमोची दानशुर ते बलकारी।।३५।। शिरोधारी धन्वंतरी नेत्रे सुनेत्री। कर्णो सुदर्शन धारी जिव्हा ज्ञानदायी।।३६।। नासिका रत्नधारी मन्या बलशाली। स्कन्धौ स्कन्द पिता वक्ष धरि सुवक्षा।।३७।। उदर पाली विघ्नहारी गुह्येंद्रियौ सुशाली। जंघे जंघनायक पादौ पाली विश्वधारी।।३८।। सदा सर्व देहि रक्षिती सौभाग्यकारी। अन्तरबहि अहोरात्री पाली दारिद्रय हारी।।३९।। कायिक मानसिक पीडा है सबसे भारी। नाश करने दवा सुझावे जय दुःखहारी।।४०।। धन्वंतरी का नाम लेत

जो कोई। ता सम धन्य और नही कोई।।४१।। स्नानोत्तर नाम लेत जो कोई। ता सम पुण्य और नही कोई।।४२।। नमो माई धन्वंतरी करे नाडी परीक्षा। नाश करे गर को ऐसे देवे सुरक्षा।।४३।। धन्वंतरी देव अंश इस सृष्टि का। सुखी करे भाव उसी दृष्टी का।।४४।। तीन लोक तुम्हारे चरणो मे होवे। सारे विश्व को सुख ही सुख देवे।।४५।। स्वामी साई को धन्य धन्वंतरी रुप में पाया। नाश कराके रोगों को भगत सुखाया।।४६।। स्वामी साई दवा रुपी अमिरस फवारे। स्वस्थ जीवन देके भगत को सुधारे।।४७।। स्वामी साई देवे संजीवन बुटी। सेवन कराके दिलावे स्वस्थ की चोटी।।४८।। कुल का करे संभाल कुलदेव सहित स्वामी साई माता। सदा सुख देवे प्रचंड समृध्दी की दाता।।४९।। हे स्वामी साई दिजे जीवन को आकार। बनावे इस भगत को करे सुभाग्य को कृपार।।५०।। सद्गुरु स्वामी साईने किया ये ऐलान। ज्योत जगालो जीवन की जान लो ऐहसान ।।५१।। पान करो संजीवन बुटी, मंत्र का करे उच्चार। मृतक को देवे जीवन यही उस की लिलार।।५२।। खोले भाग्य द्वार नेहलावे बारंबार। असाध्य को नाश करके स्वास्थ्य करे साकार।।५३।। जीवनरुपी भूमी पे बिमारी है भंवर। खिलाके संजीवन बुटी करे रोग को आवर।।५४।। भोगरुपी पोटला, करे दु:खरुपी सागर। संजीवनी ज्योत जलाके, करे जीवनरुपी जागर।।५५।। शिवरुपी दंडे से घुलावे मनरुपी समंदर। दु:ख को छोडके सुख को करे अंदर।।५६।। जान डालके दवामे, दुवा चले संग। भगावे कष्ट को, जीवन को दे नयी उमंग।।५७।। सुखरुपी दवा को, देवे ज्ञानरुपी भावना। मंत्ररुपी जागर से, बुटी करावे अमृत जाना।।५८।। फुंक के तारक मंत्र करावे संजवीन। प्राशन करनेसे, भोग का करे धावन।।५९।। नवनाथरुपी खल में,

स्वामीरुप दंडा। धन्वंतरी की आज्ञासे, घुलावे यह कुंडा।।६०।। भावित करे दवाको, संतरुपी संग। बने त्रिमूर्तीरुप बुटी, भक्त को करे दंग।।६१।। ऐसी संजीवन बुटी होवे चमत्कारी। जान देवे मृतक को, स्वामी साईरुपी अवतारी।।६२।। संजीवन बुटी की लीला है अपरंपारा। भक्तों के रोगों को झट से फटकारा।।६३।। अघोरी विद्या, जारणादी होवे भयंकारा। बुटी मंत्र के ध्यान मात्र से रोगी को देवे छुटकारा।।६४।। भक्त हनुमान जैसे रामचंद्र सीता को तारे। वैसे बुटी ध्यान मात्र से सारे रोगों को मारे।।६५।। उठा के गोवर्धन, कृष्ण भक्त की रक्षा करे। दु:ख सारके, बुटी सुख की छाया धरे।।६६।। यह बुटी विश्व में रहे गुणज्ञानी। स्वामी साई के वर से, करे संजीवन मानी।।६७।। ब्रह्मरुपी छाया दुरावे सृष्टी की माया। भावीत हुई बुटी सफाया करे मन काया।।६८।। विष्णुरुपी जलसे, दवा को करे भावन। बुटी को बांधके, मृतक को करे संजीवन।।६९।। तिन्हो दोष धातुमल मे मिश्रित होके बनावे रोग। संजीवन बुटी नाश करे, मन काया का भोग।।७०।। धन्वंतरी का लेके ज्ञान, मिलाके स्वामी साई का विज्ञान। संजीवन करे बुटी, पारब्रह्म मे लगावे ध्यान।।७१।। पंचभूतों को मिलाके, बांधे बुटी गोल। माया को मिटावे, बुझे रोगों का घोल।।७२।। आच्छादन करे शेष फणा, रक्षण करावे परशुराम। कुंठित करे कुमार्ग, बुटी देवे आराम।।७३।। पिता का लेके आशीर्वाद माता की लेके आस। अंजन करके दोनों का संजीवन करे खास।।७४।। संजीवन बुटी कर के कमाल, उडावे धमाल। मार के त्रिदोष, स्वास्थ्य का करे संभाल।।७५।। सुरज से लेके जीवन चंदा से लेके प्रिणन। बुटी को करे भावन, वहीं रोगों का करे धावन।।७६।। रोगपीडों का कुआ है बहोत ही गहन। डाल के संजीवन, बुटी रोगी को दे

जीवन।।७७।। वटवृक्ष की छाया मे बैठे स्वामी साई फुंके आदेश। परमज्योती जलाके, बुटी को संजीवनी दे भावेश।।७८।। चंदन घी से, घिसके सुगंध बाटे। सुंगध से मन को मोहे, विशाद को जल्द से काटे।।७९।। ऋण से माया, माया से ऋण खेले भागंदौड। संजीवन बुटी जान डाले, यही भारी गौड।।८०।। स्वामी तूही माई, माई के रुप में देखी आई। बंधन को खोलके, जिंदा करे तूही साई।।८१।। मुठ्ठी मे लेके बुटी, ध्यान करावे निरंजन। दु:ख दारिद्य को मारे, यही सुखरुपी अंजन।।८२।। ज्ञान की गुफा, गुफा मे विज्ञानरुपी हाथी। पान करे बुटी, सत को बनावे जीवनसाथी।।८३।। ऐसे है स्वामीजी की ज्ञानरुपी संजीवन बुटी। सत्य को प्रगट करने, वो ही माया से छूटी।।८४।। स्वामी साई को सप्तर्षी रुप में पाया। कृपा दृष्टी से विश्व में सुख समाया ।।८५।। स्वामी साई होके गुरु देवे अमृत ज्ञान। आयुर्वेद को प्रगट कराके फुलावे सारा जहान।।८६।। ज्ञान का शिरोमणी स्वामी साई तुही साजे। सुद्गुरू बनके भगत के मन पे विराजे।।८७।। स्वामी साई तुही चरक स्वामी साई तुही सुश्रुत। स्वामी साई तुही वाग्वट स्वामी साई तुही ज्ञानदेव।।८८।। स्वामी साई की कृपा से सप्त लोक धारा। भगत के जीवन को गिरावट से तारा।।८९।। धरती पे वास करे रोग रुपी चांडाल। नाश करके उसे स्वामी साई करे संभाल।।९०।। स्वामी साई को औषधी के रुप में पाया। सदा ही सुखी करे भगत को तेरी ही छाया।।९१।। स्वामी साई की कृपासे विर्यवान बनाया। ज्ञान देके रोंगो का करे सफाया।।९२।। मुळ पुरुष तुही स्वामी साई राया। वटवृक्ष के निचे बैठे तुही जगत को भाया।।९३।। मुळ पुरुष स्वामी साई तुही कुलरक्षक। दीन दुखारु भगत के रोगों का तुम्ही भक्षक।।९४।। सुवन जैसी काया मन ही मन रमाई। सदा ही

भगत के उपर कृपा आर्शीवाद बनाई।।९५।। पंचभुतों का रुप तेरेही अंदर समाया। संजीवनमयी जीवनज्योत तुने जगाया।।९६।। जगत की जडीबुटी लेवे तेरा आसरा। रोगों को मारने हेतु औषध को देवे सहारा।।९७।। प्रजापती तेरे ही अंदर समाया। परमात्मा बनके सारे विश्व को बनाया।।९८।। झुला झुलावे गुरुदेव स्वामी साई। विश्व को प्यार देवे तुही जगत माई।।९९।। स्वामी साई तुही आठ चिरंजीव। कृपा दृष्टी से पत्थर को करे संजीव।।१००।। संजीवन संजीवन कहे स्वामी साई। मुर्दे में जान डाले निरंजन निर्मल माई।।१०१।। नरसिंह स्वामी साई तुही जगत त्राता। सदा ही सुख समृद्धी कृपाछत्र दाता।।१०२।। स्वामी साई का रुप ब्रह्मा विष्णु महेश। जीवन की डोर संभाले सच्चा भावेश।।१०३।। स्वामी साई निरंजन माई ज्ञान का भंडार। मुढी को सुख देवे प्रकटे बारंबार।।१०४।। खोल के भाग्यद्वार नहलावे मन काया। मोक्ष द्वार खोल के भगत को सुखाया।।१०५।। खोले भाग्य किवाड घुमा के जादु की दंडी। भगत की रक्षा करे जैसे हो माता चंडी।।१०६।। कमंडलू से अमृत पिलाके लौटादे स्वास्थ को। रोंगों का नाश करके अचंबीत करे सबको।।१०७।। अष्ट कमल दल मे आप विराजे। निरंजन स्वामी साई ज्ञान का शिरोमणी साजे।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थार्ऽपण मस्तु।।

अध्याय १६ गुरुज्ञान प्रकाश माला

जय जय जय गणपती गणराजु। मंगल भरण करण शुभ काजु।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। करे हंस सवारी बुद्धी की दाता।।२।। जय जय जय कुलदेव कुलस्विमीनी माता। दीन भगत की भाग्य की विधाता।।३।। जय जय जय सद्गुरु विश्व ज्ञान दाता। दिप जलाके अज्ञान को नाश कराता।।४।। जय जय जय स्वामी साई ज्ञानेश्वर माई। धन्य धन्य माता पीता जो बालक को तराई।।५।। जय जय नृसिंह साई जय जय काश्यप साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।६।। जय जय योगी साई जय जय स्वामीनाथ साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।७।। जय जय यतीश्वर साई जय जय प्रज्ञापुरनिवासी साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।८।। जय जय चिरंजीवी साई जय जय दिगम्बर साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।९।। जय जय कौपीनधारी साई जय जय संन्यासी साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।१०।। जय जय समर्थ साई जय जय ज्ञानभास्कर साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।११।। जय जय नारायण साई जय जय धनदाराविवर्जित साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।१२।। जय जय सर्वसङ्गपरित्यागी साई जय जय ज्ञानदो साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।१३।। जय जय गुरु साई जय जय ब्रह्मीन्द्र साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।१४।। जय जय ब्राह्मण साई जय जय ज्ञानी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।१५।। जय जय क्षेत्रज्ञ साई जय जय सुरवन्दित साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।१६।। जय जय वन्दनीय साई जय जय पूजनीय साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद

दिलाई।।१७।। जय जय द्वन्द्वातीत साई जय जय जगद्गुरु साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।१८।। जय जय सर्वज्ञ साई जय जय सर्वसाक्षी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।१९।। जय जय सर्वातीत साई जय जय सुरेश्वर साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।२०।। जय जय लम्बोदर साई जय जय विशालाक्ष साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।२१।। जय जय गोपाल साई जय जय धर्मरक्षक साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।२२।। जय जय अजानुबाहु साई जय जय धर्मज्ञ साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।२३।। जय जय शीघ्रगामी साई जय जय मलान्तक साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।२४।। जय जय वेदान्ती साई जय जय तत्त्ववेत्ता साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।२५।। जय जय वेदवेदाङ्गपारग साई जय जय धर्माचार्यो साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।२६।। जय जय गुरुश्रेष्ठ साई जय जय पण्डित साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।२७।। जय जय शिरोमणि साई जय जय प्रसन्नवदन साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।२८।। जय जय प्रवाट् साई जय जय प्राज्ञ साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।२९।। जय जय प्रज्ञापुरेश्वर साई जय जय कामजित् साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।३०।। जय जय क्रोधजित साई जय जय त्यागी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।३१।। जय जय नित्यमुक्तसदाशिव साई जय जय मायातीत साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।३२।। जय जय महाबहुर्महायोगी साई जय जय महेश्वर साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।३३।। जय जय काषायवस्त्रः साई जय जय कामारि साई। सदा ही

भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।३४।। जय जय दम्भाअहंकारवर्जित साई जय जय मुनी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।३५।। जय जय तूर्याश्रमी साई जय जय हंस साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।३६।। जय जय ध्यानयोगपरायण साई जय जय ध्यानयोगी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।३७।। जय जय ध्यानसिध्द साई जय जय निर्विकल्प साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।३८।। जय जय निरज्जन साई जय जय गीतापुस्तकधारी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।३९।। जय जय गीतापाठप्रवर्तक साई जय जय गीताशास्त्रविशेषज्ञ साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।४०।। जय जय गीताशास्त्रविवर्धन साई जय जय शिव साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।४१।। जय जय शिवकर साई जय जय शैव साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।४२।। जय जय ब्रह्माविष्णुशिवात्मक साई जय जय हरिप्रियो साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।४३।। जय जय हरिरुप साई जय जय पाण्डुरंगसखा साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।४४।। जय जय जगद्रूपो साई जय जय जगद्वंद्यो साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।४५।। जय जय जगत्पूज्यो साई जय जय जगत्सखा साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।४६।। जय जय जगद्बंधु साई जय जय जगत्पुत्रो साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।४७।। जय जय जगन्माता साई जय जय जगत्पिता साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।४८।। जय जय मुक्तसङ्ग साई जय जय सदामुक्त साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।४९।। जय जय मुनिमौनिपरायण साई जय जय गोविन्दो साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर

भगाई।।५०।। जय जय गोविन्द साई जय जय श्रेष्ठ साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।५१।। जय जय महासिद्ध साई जय जय महामुनि साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।५२।। जय जय त्रिदण्डी साई जय जय दण्डरहित साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।५३।। जय जय वर्णाश्रमविवर्जित साई जय जय मंत्रकर्ता साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।५४।। जय जय मंत्रवेत्ता साई जय जय जपयोगी साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।५५।। जय जय जपप्रिय साई जय जय अक्रोध साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।५६।। जय जय सात्त्विक साई जय जय शान्तो साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।५७।। जय जय ज्ञानमुद्राप्रदर्शक साई जय जय वरदाता साई। सदा ही भगत के दुर्गुणोंको दूर भगाई।।५८।। जय जय मार्गदर्शक साई जय जय स्वामीराज साई। सदा ही भगत को कृपाआशिर्वाद दिलाई।।५९।। योगी योगी बनखंड का बासा। श्रीगुरुदत्त स्वामी जगत मे खासा।।६०।। लेके अवतार चौथा परब्रह्म अवतारा। कहे अवलीया स्वामी सुंदर रुप का तारा।।६१।। फुके चिलीम खोकला रहे फुंकारा। सुगंधी धुम माया मे संचारा।।६२।। श्रीरामचंद्र को जैसे सीता है प्यारी। वैसे भक्त के मन पे करे सवारी।।६३।। हे अवलिया मार के थाप बनावे रतन। पत्थर के जीवन को करावे भावन।।६४।। नवनाथ चले उस अवलिया के संग। चमत्कार करके जान को करे दंग।।६५।। लेके शाबरी माला मारे फुंकर। कठनाई वाला काम बनावे सुकर।।६६।। धारण करे कमंडलू बाए हाथ में। संसार संजीवन बुटी समाई उसमे।।६७।। भूतप्रेत का बजता रहे नगारा। चिमटे की धाक से होवे बंजारा।।६८।। जादू की मलाई टोना की

मिठाई। खाके अवलियाने डकार लगाई।।६९।। ॐ क्लिम् श्रीस्वामी समर्थाय नमः। मंत्र जाप ने बुरी नजर को झट से मारा।।७०।। ॐ श्रीमहालक्ष्मी माय स्वामी समर्थाय नमः। मंत्र जाप ने किया धन का फवारा।।७१।। शिव रुपी मटका जिस में शक्ति रुपी मख्खन। कृष्णरुपी अवलिया खिलावे सार के ढक्कन।।७२।। वास कर के गोपालों के संग कृष्ण सुखाया। वैसे रुप मे अवलिया को भक्त ने पाया।।७३।। नदी डोल के अपनी मस्ती सागर मे मिले। सुख देके भक्तन का जीवन खिले।।७४।। त्रिशूल के धाक से भूतों को धमकाया। दूर करने रोगों को अवलिया ने डमरु बजाया।।७५।। चक्र ने चक्रीत किया दुख को। चक्र घुमा के चक्र से मारे बुरी नजर को।।७६।। घुमके चक्र सारे जगत को फेरा लगाया। अवलिया ने अपनी उंगली पे स्थिर कराया।।७७।। धारण करे गले में रुद्राक्ष की माला। स्वामी अवलिया ने गिरने से संभाला।।७८।। जैसे मधुमख्खी चुसे अमृत फुलों का। भ्रमर सोए ओढ के चादर कमल दलों का।।७९।। वैसे अवलिया साधू पिवे दुख भगतका। खोले लक्ष्मी भांडार नाश करे दारिद्रय ऋण का।।८०।। जागृत हुए गोल घुमट पहुंचे दसवे द्वार। इहलोक में दिखावे परलोक का भार।।८१।। धारण करे भस्म को लेके माई की आन। चमका के बिजली दिखावे भक्ती की भान।।८२।। टिमटिम करे जुगनू फैलाके प्रकाश। अवलिया साधू दूर करे माया जाल का पाश।।८३।। अवलिया की कृपा से पूरा पहाड चढावे तीन कदम। समुंदर तैराके मिटावे सारे गम।।८४।। उड्डाण कराके हवा में दिखावे चमत्कार। पानी पर चलाके दुर करे माया का बुखार।।८५।। अवलिया साधू फैलावे छत्र की छाया। सुखी करे इस भगत को तेरा ही साया।।८६।। गूटका करे भक्ती का पान करे शक्ती का। चबावे माया

को दर्शन देके शिव का।।८७।। उंगली पकडे तुम्हारी ये अनाथ। न छोडे कभी हे नाथो के नाथ।।८८।। पंचदीप नचाके सुलादे गमके अंधेरे को। अवलिया शक्ती बुझावे अघोरी फेरे को।।८९।। अवलिया ने दिया ग्यारह रुपय्या। नाश करे भोगन को सच है मय्या।।९०।। एक रुपय्या की देखे कमाल। रोके कामको उडे धमाल।।९१।। दुसरा खातमा कर क्रोध का। लोभ को डाले तिसरा पैका।।९२।। मोहको करे लाचार चौथा रुपय्या। मदको मारे यह पाचवे ने फरमाया।।९३।। मत्सर जैसे जहर आपस में करें बैर। उसे मार के छटा करावे शांती की सैर।।९४।। अगले पांच मारे चंचल आदि विकार। समृद्धी देके करे जीवन रुपी साकार।९५।। अवलिया तुम्हारी हो जय जय कार। मोहे मन को मिट्टीको दे आकार।।९६।। न छोडे सदा रहे मेरे साथ। "भिऊ नकोस मी पाठीशी आहे" ऐसे मारे हाक।।९७।। जय जय स्वामी जय जय अवलिया। तेरे दरबार में भक्ती का दिया जलाया।।९८।। तेरे ज्ञान से जग में हुए उजाला। मुढी को सुधारे तुही सबका रखवाला।।९९।। स्वामी साई जैसे कोटी सुरज का उजाला। बुझाके अंधार बने जीवन का रखवाला।।१००।। बं बं शिव बं बं बोल के अघोरी को देवे ठोका। स्वामी साई ने दुख दारीद्रय को दूर से ही रोका।।१०१।। स्वामी साई फुंके अज्ञान की चिलीम। माया बुझाने देवे ज्ञान की तालिम।।१०२।। आशिर्वाद तुम्हारा बहुत हीतकारी। सदा ही मुढ भगत को करे सदा ही सुखकारी।।१०३।। जो तुम्हारे चरणा चीत लावे। ताकी मुक्ति जल्दी हो जावे ।।१०४।। जीवन की नैया तैरावे माया का सागर। स्वामी साई पिलावे मुक्ति का क्षीरसागर।।१०५।। अमिरस का ज्ञान ज्ञान का अमिरस बालक जुडवे महान। स्वामी साई के स्पर्श से फुलावे सारा जाहन।।१०६।। मै भगत

लेके भक्ति की आस। छोडे सदा राखे तेरे ही पास।।१०७।। सत्य का दिया जलाके करे उजाला। ॐ स्वामी ॐ साई तुही सबका रखवाला।।१०८।।

।। श्रद्धापूर्वक भक्तिअंजली श्री स्वामी साई समर्थाऽर्पण मस्तु।।

।। भर दे मेरी झोली ।।
हे स्वामीराजा हे कृपाळा
मला ध्यानमूर्ती दिसू देई डोळा
कुठे माय माझी म्हणे बाळ जैसा
समर्था तुम्हाविण हो जीव तैसा ।।धृ।।
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।१।।
महाशक्ती जेथे उभ्या ठाकताती
जिथे सर्वसिध्दी पदी लोळीताती
असे सर्व सामर्थ्य तो हा समर्थ
परब्रह्म साक्षात गुरुदेव दत्त
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।२।।

ब्रह्म हा जणू रेणू या जगाचा
असे तो पाहुणा या नाटकी नियतीचा
त्यावरी बैसोनी पाहुनी कला सुकुमार
प्रत्यक्ष परब्रह्म गुरुदेव दत्तावतारं
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।३।।
भिक्षा मागण्या हेतूनी आलो मी तुझपाशी
आई तू न ठेवोनी भरभरुन देशी
ठेवा हा रिध्दीसिध्दी चौसष्ट कलादिकांचा
करोनी वर्षाव रौप्य हिरे पाचू माणिक्याचा
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।४।।
अजानूबाहू दिव्यकांती सतेज

नसे मानवी देह हा स्वामीराज
मुखावरी तयांच्या सतत स्मितहास्य
जे उलगडती या जीवांचे नवनविन रहस्य
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।५।।
“भिऊ नकोस मी तुझ्या पाठीशी आहे”
हेची जाणुनी पाहा
दयेची कृपेचीच ती शुध्द मूर्ती
प्रभा फाकली त्या स्वामी योगेश्वराची
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।६।।
मी बापुडा या जगात अर्चितो तुजपाशी
तुची खरा मायबाप भरुनी अंश-अंशी

जिथे तुमचीच दोनही कमल सुवर्णपाद
करी कृपा मजवरी घालितो मी साद
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।७।।
येथे चालतो सावळा खेळ भूत-प्रेतादिकांचा
सोडूनी हा भवपाश घेऊनी अवतार स्वामींचा
असे हे स्वामी दयाळू, कृपाळू, मायाळूच फार
ऐकली आहे अगम्य ती तुझीच कीर्ति अपरंपार
ॐभिक्षाम् देही हे गुरुस्वामी
तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।८।।
स्वामी समर्थ निरंजन मायावी तो दिगंबर
यतीराज नवग्रहांचा स्वामीराज असोनी तो यतिश्वर
तुझे बाळ पाही तुझीच वाट देवा

घालुनी मज भिक्षा शिरी वरदहस्त ठेवा
ॐनमो गुरुस्वामी तेरे आशीर्वाद से भर दे मेरी झोली
युगयुगांतर से रहे ना कभी खाली ।।९।।
अशी ही भिक्षा घेऊनी संतोष पावलो मी
गळे ऋण दारिद्र्याचा चढे वर्क आनंदाचा
विटले पाप, भोग, ऋण, दारिद्र्य जन्मजन्मांतरीचे
पाहुनी दिव्य अवतार स्वामीराज ते अक्कलोटीचे ।।१०।।
श्री स्वामी समर्थाऽर्पणमस्तु
शुभं भवतु । शुभं भवतु । शुभं भवतु ।